जुलाई-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०२ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक जुलाई-२०१८

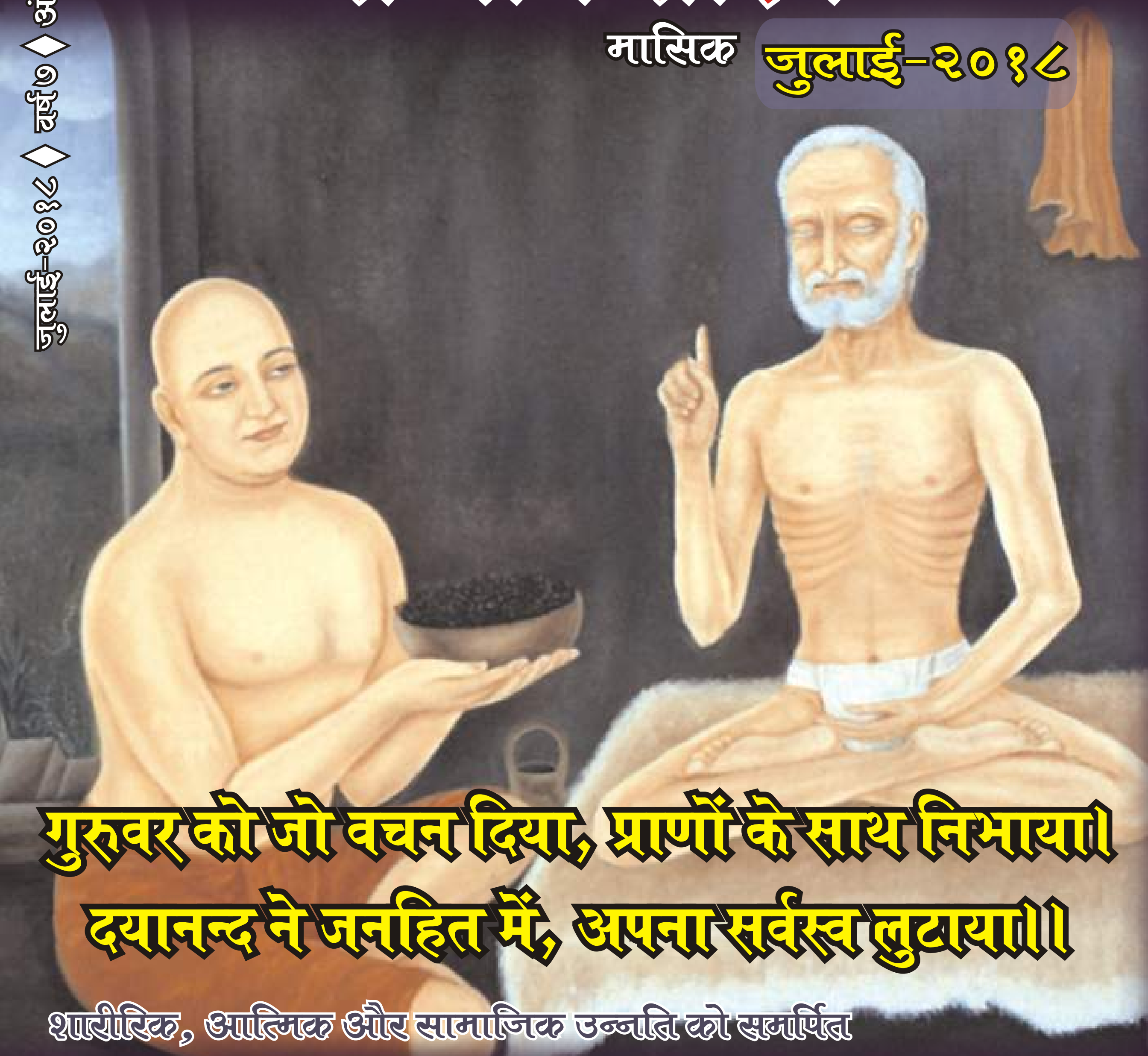

गुरुवर को जो वचन दिया, प्राणों के साथ निभाया।
दयानन्द ने जनहित में, अपना सर्वस्व लुटाया।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ७६

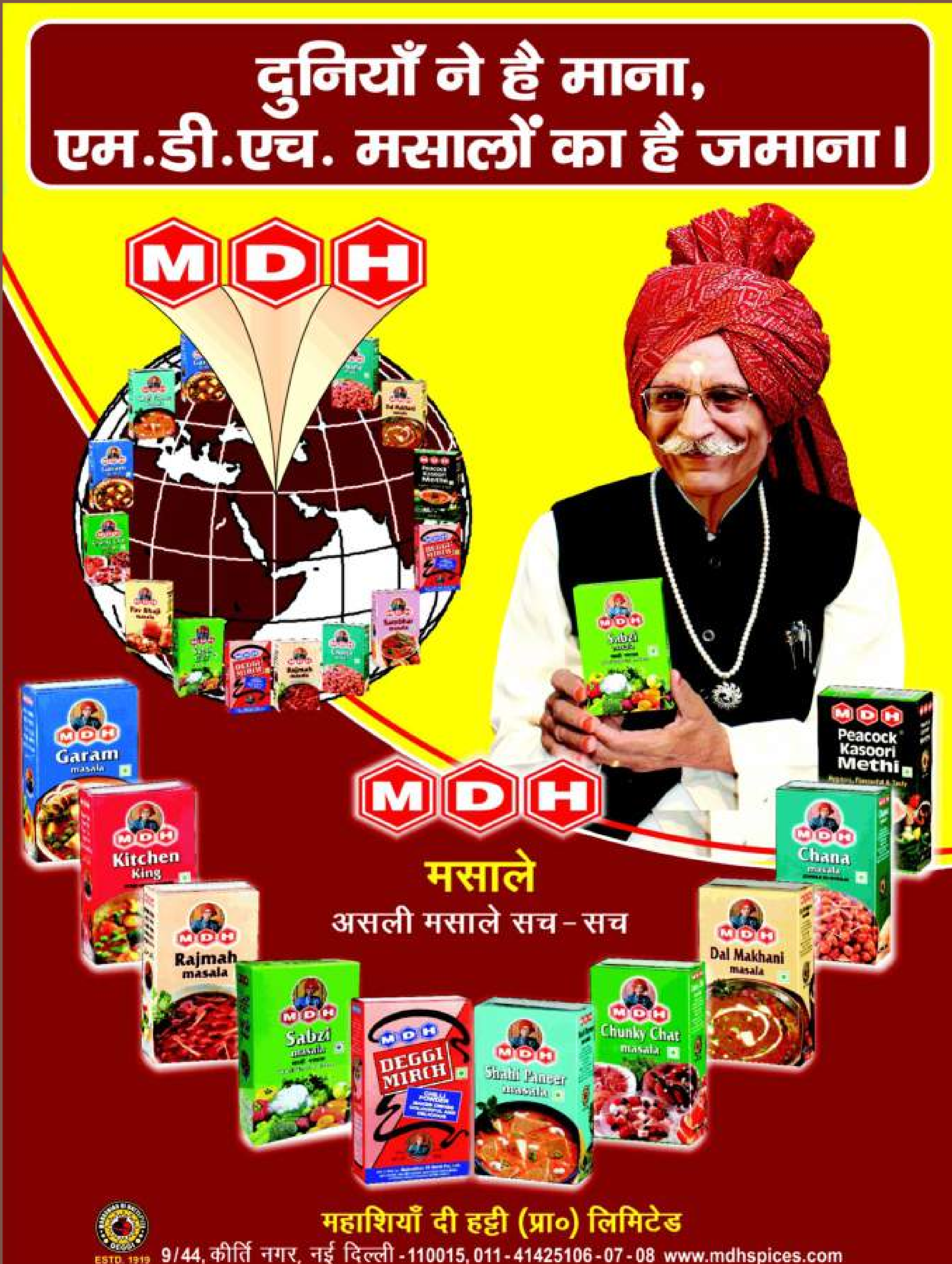
दुनियाँ ने है माना,
एम.डी.एच. मसालों का है जमाना।
MDH
Garam masala
Kitchen King
Rajmah masala
Sabzi masala
DEGGI MIRCH
Shahi Paneer masala
Chunky Chat masala
Dal Makhani masala
Chana masala
Peacock Kasoori Methi
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015, 011-41425106-07-08 www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	-1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११९
आषाढ़ कृष्ण अष्टमी
विक्रम संवत् २०७५
दयानन्दाब्द १९४

July - 2018

०४	वेद सुधा
११	मानव जाति की समानता
१२	दशकों की साधना का सुफल
१४	नमो कप की शानदार सफलता
१४	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१८
१५	दु:ख क्या है? व उसका निदान
१८	सबका आदि मूल परमेश्वर है।
२०	'सबका आदिमूल- परमेश्वर'.....
२५	डॉ. सोनी को जन्मदिन की बधाई
२८	स्वास्थ्य- खर्राटों का उपचार जरूरी
२९	कथा सरित- सकारात्मक सोच
३०	सत्यार्थ पीयूष- अपवाद भी ......

समाचार २६

हलचल २७

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०२

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वेद प्रदर्शित पराक्रम प्रदक्षिणा

पौराणिक धारणाओं से हटकर तथ्यान्वेषी विचारकों के अनुसार व्रज क्षेत्र में राजस्थान की ओर से भीषण बाढ़ का पानी आकर भयंकर ध्वंस करता था। इससे सुरक्षा के लिए व्रज नायक श्रीकृष्ण ने व्रजवासियों को किसी तर्जनी से नहीं, प्रत्युत् अपनी सर्वप्रियता के आकर्षण से कृश कनिष्ठा के संकेत मात्र से एकत्र करके, वहाँ पर जो बाँध बनवाया था उसी के अनुरक्षण निरीक्षण के लिए परिभ्रमण हेतु प्रेरित किया था। अब उसी को गोवर्द्धन पर्वत मानकर अनेक मठ, मन्दिर, आश्रम तथा गोमुख कन्दरा बनाकर पंचकोसी से चौरासी कोसी परिक्रमायें की जाती हैं। अब तो रात्रि दिन भजन कथा मण्डली बारहों महीने चलती रहती हैं। अपने राजकीय सेवाकाल में वहाँ स्थित खण्डस्तरीय कार्यालयों के निरीक्षण हेतु जाता रहा हूँ, किन्तु परिक्रमा-पथ पर कभी अग्रसर नहीं हुआ। अब तो वहाँ के एक महन्त स्वामी गणेशपुरी जी महाराज अलीगढ़ परिभ्रमण पर आते हैं तो 'वरेण्यम' कुटी पर पधार कर पेयजल प्रबन्ध के लिए सहयोग राशि लेकर परिवार को पुण्य प्रसाद दे जाते हैं।

आइये! गोवर्द्धन से परिचय कर लें। विनाशक बाढ़ को रोकने से गोवर्द्धन अर्थात् भूमि की वृद्धि संवृद्धि होती है। भूमि के रक्षण से गो अर्थात् गायों का पालन होता है। खेती-बाड़ी एवं गोपालन से, मानव गोस्वामी अपनी इन्द्रियों व वाणी का अधिकारी बनता है और रवि व ज्ञान की किरणों को ग्रहण कर सन्मार्ग द्वारा मोक्षगामी बनता है। पता चला कि अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय कोष को सचेष्ट बनाकर वह आनन्दमय कोष का अधिकारी बनता है। सारांश यह है कि इन सब गौ सम्पदाओं को समेटने वाली मानव योनि ही गोवर्द्धन के स्वरूप को सम्मानित करती है और इसके समुत्कर्ष के लिए जो मानसी गंगा में गोते लगाकर प्रदक्षिणा की जाती है वही वास्तविक गोवर्द्धन परिक्रमा है। भौतिक रूप में भी वहाँ यह प्रतीक गंगा उपस्थित है, जिसे हम मानस में उतारकर आगे गोवर्द्धन परिक्रमा पर बढ़ते हैं।

अथर्ववेद के १६ वें काण्ड सूक्त १८ वें में १० मंत्र हैं। वे सभी दसों दिशाओं में इस गोवर्द्धन परिक्रमा हेतु पथ प्रदर्शन करते हैं। सुविधा यह है कि तीन शब्दों को छोड़कर सभी मंत्रों की शब्दावली समान है। अस्तु प्रथम मंत्र को आधार बनाकर दशों मंत्रों की मनसा वीथिका बनाई जा सकती है। देखिये-

अग्निं ते वसुवन्तमृच्छन्तु। ये माघायवः प्राच्या दिशोऽभिदासात्।।

अर्थात् वसुपति अग्रणी प्रभु की ओर हम पहुँचने की इच्छा से आगे बढ़ते हैं, तो पूर्व दिशा में हमारा अशुभ चीतने वाले हमको सता कर क्षीण करने को उद्यत होते हैं तो अग्नि प्रभु हमको आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। इसी प्रकार सभी दिशाओं की बाधाओं को पार कर साधनाओं को सफल बनाने का संदेश इस सूक्त से प्राप्त होता है जिसे निम्न सारणी में सूची बद्ध कर सरणी-पथ संदर्शित किया जाता है।

गोवर्द्धन-प्रदक्षिणा-पथ

सारणी संचरण

मन्त्र क्रम	प्रदक्षिणा पथ	लक्ष्य	पथरोधक असुर वृत्तियाँ	पथशोधक सुर शक्तियाँ	संरक्षक देव	देव का आदर्श	प्रत्यक्ष निदर्शन
१.	पूर्व सामने की दिशा	वसुवन्तम्- संसार में अपना स्थान बने	अज्ञान की अधीरता	ज्ञान की धृति	अग्नि	प्रमाद त्याग कर उठना	माता-पिता-गुरु -ईश्वर के संरक्षण में सजग होकर प्रगति करना
२.	आग्नेयी पूर्व-दक्षिण मध्य दिशा	अन्तरिक्षवन्तम्-हृदय की भावना	असहिष्णुता	क्षमा की सहनशीलता	वायु	प्रवाह में स्थिर होना	संकल्पवान होकर वायु के प्रवाह में अडिग रहकर लक्ष्य की ओर चलना
३.	दक्षिण दक्षता की दिशा	रुद्रवन्तम्- पीड़ा सहकर भी मस्तिष्क की दृढ़ता रखना	शिथिलता व अन्यमनस्कता	दम मन को दुराचरण से रोकना	सोम	ब्रह्मचर्य से सोम का रक्षण करना	संकल्पदृढ़ी होकर सदाचरण का पालन करना

४.	नैऋत्य दक्षिण-पश्चिम की मध्य दिशा	आदित्यवन्तम्- सूर्य समान समय बद्धता एवं उजागर रहना	विश्वास घातक अन्धकार में छुपाकर स्वार्थ साधना करना	अस्तेय- छल-कपट चोरी से बचना	वरुण	सबको आवृत्त करने वाला सर्वोत्तम सर्वद्रष्टा प्रभु या प्रशासक	दुर्गुण त्याग श्रेष्ठ गुण धारक सर्व प्रिय बनना
५.	पश्चिम पीछे की दिशा	द्यावापृथिवीवन्तम्- मस्तिष्क से लेकर शरीर के सर्व अवयवों की स्वस्थता	अशौच व मलिनता की घृणा	शौच- राग द्वेष पक्षपात त्यागना भीतर-बाहर की शुद्धि	सूर्य	अपनी प्रखर किरणों से बाहर-भीतर सृजन करता वेदोपदेशक भी प्रोत्साहन करता	जगत् में गुण सृजन व धनोपार्जन करते रहना
६.	वायव्य पश्चिम-उत्तर के मध्य	औषधीमती- पोषक व सुधारक शक्ति संग्रहण	इन्द्रिय विग्रह वासनाओं की ओर भटकना	इन्द्रिय निग्रह दुराचरण से रोकना	अपः	सुकर्म, निष्ठा, सरसता प्रदान करती है	सुकर्मों में संलग्न रहने से इन्द्रियाँ वश में रहना
७.	उत्तर उन्नति की दिशा	सप्तऋषिवन्तम्- जिह्वा, नाक, नेत्र, कान, त्वचा, मन, बुद्धि ज्ञान स्रोत सम्पन्नता	मति मन्दता- इन्द्रियों का दुरुपयोग करना	धीः मादक द्रव्य त्याग योग से सुबुद्धि की वृद्धि	विश्वकर्मा	रचनात्मक क्रियाशीलता में व्यस्त रहना	सुरस, सुगन्ध, सुदृष्टि, सुशब्द, सुस्पर्श, मनन, व अवधारण से शुभ कर्म करना
८.	ईशान उत्तर-पूर्व के मध्य की दिशा	मरुतवन्तम्- प्राणवायु की भाँति सान्त्वना	अविद्या-अन्धकार में दम घुटना	विद्या सा विद्याया मुक्तये। बन्धन वेदना से छुड़ाना।	इन्द्रम्	ऐश्वर्य एवं शक्तिमत्तावान् होकर (मा+रुत) निर्बल को रोने से बचाना	दमघोट स्थान पर जैसे मरुत वायु प्राण बचाती है, वैसे ही शक्तिशाली इन्द्र राजा निर्बल, निर्धन की रक्षा करता है।
९.	ध्रुवा नीचे भूमि की ओर की दिशा	प्रजननवन्तम्- सुप्रजा एवं सन्ततिवान होना	असत्य एवं भ्रम से बाधा करना	सत्य जैसा जो हो उसको वैसा समझना, बोलना और करना	प्रजापति	परमेश्वर, राजा एवं पिता की भाँति प्रजा व सन्तान का पालन करना	घर, समाज एवं राष्ट्र में मात्र जन्य या जनन करने वाली जनता नहीं, अपितु प्रकृष्ट रूप से प्रजा का निर्माण हो
१०.	ऊर्ध्वा ऊपर आकाश की ओर की दिशा	विश्वदेववन्तम्- घर, समाज-राष्ट्र ही नहीं, विश्व के लिए दैवीय उपकारी देन प्रदाता होना	क्रोधी व्यक्ति अपनी देन देकर भी देव नहीं दानव बनता है	अक्रोध फलों से लदा वृक्ष झुककर पूज्य बन जाता है।	बृहस्पति	आकार-प्रकार से बड़े होने की अपेक्षा बड़प्पन का अधिक महत्व है।	बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर। पन्थी को छाया नहीं फल लागे अति दूर।।

१. संरक्षक से धैर्य, धैर्य से संसार में सम्यक् स्थान बनता- धरती पर खूब स्थान घेर लेना समुचित नहीं, जितना स्थान पास है उसको सुविधा सम्मानपूर्ण बनाना ही वासना है। भारत के प्रमुख धनी के घर पुत्र जन्म हुआ। बड़ा समारोह एवं प्रह्लाद का आयोजन हुआ। बढ़ते-बढ़ते किशोरवय तक पहुँचते-पहुँचते उसका आकार विशाल और भार कुन्टल से अधिक हो गया। वह विरूप वैचित्र्य का स्रोत तो बना किन्तु सन्तान सुलभ दुलार के द्वार उसके लिए बन्द हो गये। प्रभूत धन व्यय करके एक आहार विशेषज्ञ महिला (डायटीशियन) के अनुरक्षण में रखा गया। बालक व परिवार ने धैर्य बनाये रखा। वर्षों के उपचार के बाद सामान्य स्वरूप में आया और प्यार-दुलार ही नहीं धन अम्बार का उत्तराधिकार प्राप्त कर वह अब वसुवन्तम् का अलंकार प्राप्त कर चुका है।

२. घृणा के ऊपर मनोबल की प्रेरणा बालक को अडिग बनाती- नगर में एक आधुनिक प्रतिष्ठित विजडम पब्लिक स्कूल है जिसमें प्रवेश के लिए अभिभावक लालायित होकर पंक्तिबद्ध रहते हैं। इसके विपरीत समृद्ध शिक्षा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष श्री पी.के. गुप्ता ने दो बालक स्वयं गोद लेकर उनका शिक्षण-पालन सुनिश्चित कर दिया है। दोनों के माता पिता अभावग्रस्त हैं। उनमें से बालक का नाम देव वार्ष्णेय है जो भयंकर रूप से पोलियोग्रस्त व दिव्यांग है, बालिका का नाम शायना है जिसकी माँ गृहसेविका है। बालक अपने शारीरिक कला प्रदर्शन व बालिका अपनी भाषणशैली से सभा का मन मोह लेते हैं। अभी से उन्हें प्रदर्शन हेतु दूर दूर से आमंत्रण मिलते हैं। वे संकल्पवान होकर प्रेम प्रतिष्ठा हेतु अग्रसर हैं।

३.संयम सोम-रक्षण की दृढ़ता से मस्तिष्क प्रकाशित होता- बालक सो न जाये तो उनकी चोटी ऊपर बाँध दी जाती थी। वे अपना पाठ कण्ठस्थ करते निद्रा का झोंका उनकी चोटी के झटके से थमता और पाठ स्मरण की प्रक्रिया चल पड़ती। यही रुद्ररूप की कठोरता उन्हें महान् बना देती है। भगवद्गीता को कण्ठस्थ करने की प्रतियोगिता में किशोरवय बाला मरियम सिद्धीकी ने न केवल प्रथम स्थान पाया प्रत्युत सम्पूर्ण देश में प्रीति कीर्ति की स्वामिनी बनकर प्रधानमंत्री व अन्यान्य उच्च स्थानों में लाड़-दुलार प्राप्त कर जीवन सार्थक कर लिया। जिसका मस्तिष्क जाग्रत हो जाता है वह मनुष्य जगत् में प्रकाशित हो उठता है।

४. समयबद्धता व अवसर की सजगता श्रेष्ठगुण वरीयता दिलाती- लेखक को वेद प्रचार की धुन थी। आकाशवाणी से कृषि वैज्ञानिक विषय वार्ता हेतु बुलाया जाता। दस मिनट निर्धारित होते। विषय सूचक वेदमंत्र से वार्ता प्रारम्भ करता। निश्चित समय निर्धारित अवधि का ध्यान रखना होता। एक प्रसारण अधिकारी बदल कर नये आ गए। उन्होंने कहा कि वेदमंत्र किसान क्या जानें। इसे छोड़कर विषय पर वार्ता करें। लेखक ने प्रारम्भ में मंत्र न पढ़कर अन्त में उसे जोड़कर वार्ता को पूरा कर दिया। बाद में प्रसारण अधिकारी मित्र बन गये। रंग लगा न फिटकरी रंग चोखा आ गया। अवसर यह था कि लेखक पद की गरिमा के कारण बुलाया जाता था। और समयबद्धता यह थी कि निर्धारित अवधि में विषय व मंत्र कृषक उपयोगी बना रहे।

५. गुण सृजन से धनोपार्जन एवं कुल रक्षा- लोक प्रसिद्ध महागायक ने अपनी एकमात्र सन्तान बेटी को भजन गायिका बना दिया। वृद्ध गायक गीत गाते-गाते घोर खांसी के कारण मौन हो गया। बेटी ने उसी गीत को गाकर अपना स्थान बना लिया। सूरज जैसे भीतर बाहर किरण करों से सृजन करता है वैसे ही बेटी ने अपने पिता के सृजन को अपनाकर निजवंश व पिता के अंश दोनों को अमर बनाकर शरीर व मेधा दोनों को प्रतिष्ठा बना दिया। जीवन को सुयश सफलता से भर दिया।

६. सुकर्मों में संलग्नता से शोधन पोषण होता- ब्राजील के प्रमुख नगर रियोडीजीनियरो में विश्व प्रसिद्ध ओलम्पिक का आयोजन हुआ, जो अगस्त २०१६ में पूर्ण हो गया। इसमें ५००० मीटर दौड़ के क्वालीफाइंग चक्र में न्यूजीलैण्ड की निकी हैंबलिन एवं अमेरिकी धाविका एबेडागोस्टिनो दोनों को चोट आई। हैंबलिन ने गोस्टिनो को उठाया। सहारा दिया। दौड़ने हेतु प्रोत्साहित किया। वे दौड़ नहीं पाईं किन्तु दोनों को खेल भावना के प्रदर्शन हेतु विशिष्ट पदक से सम्मानित किया गया। इससे पहले ओलम्पिक के १२० वर्षों के इतिहास में केवल १७ व्यक्तियों को ये पदक मिले हैं। इसीलिए कहा है कि सद्गुण सुकर्म सदैव जीवन सुधार एवं शक्ति संग्रहण करते रहते हैं।

७. सद्बुद्धि एवं सौहार्द सदा सम्मानप्रदायक होते- जीत एवं हार के मध्य जो सह सम्बन्धक तत्व है वह है शोणित को स्वेद बिन्दुओं में बदलने की तरलता। अन्तिम स्पृधा में स्पेन की मरीन को स्वर्ण एवं भारत की पीबी सिन्धु को रजत मिलता है किन्तु इन दोनों से हटकर वहाँ जो दृश्य उपस्थित होता है वह सद्बुद्धि एवं सौहार्द का शाश्वत स्वरूप है। मरीन जीत के बाद भी जमीन पर लेट जाती हैं और भावुकता के इस क्षण में अश्रु-तरल हो जाती है और सिन्धु असीम स्नेह से उसे उठाती एवं सहारा देती है। सौहार्द से बड़ा स्वर्ण कौन हो सकता है?

८. ऐश्वर्य एवं शक्तिवान वही जो निर्बल को सान्त्वना देता- अनेक पुत्र-बहू वाली विधवा वृद्धा को एक पुत्रवधू ने उसके फटे पुराने कपड़ों सहित कूड़े के ढेर पर पटक दिया। कोई कबाड़ी तरुण अपने साथ ले गया। वृद्धा के गुदड़ों व कपड़ों में अनेक स्वर्ण मुद्राएँ एवं अशर्फियाँ निकल आयीं। उसका जीवन धन्य हो गया। उसने वृद्धा को स्वच्छ-स्वस्थ कर सुखी बना दिया। स्वयं ससम्मान रहकर, दान-पुण्य करके प्रतिष्ठित हो गया। सार्वजनिक सम्मान में वृद्धा को उच्चासन पर विराजमान देखकर अब उसके सगे पुत्र भी इस दत्तक पुत्र के भाग्य को सराह रहे थे और अपने दुर्भाग्य पर पश्चाताप कर रहे थे।

९. सत्य व्यवहार से आधार दृढ़ होता– राजा के सत्य सदाचरण का अनुकरण कर प्रजा भी परस्पर उपकारी बनती है। यह पंक्तियाँ कृष्ण जन्माष्टमी पर अंकित की जा रही हैं। निरंकुश राजा कंस ने अपने बहन-बहनोई देवकी-वासुदेव को जेल में बंद कर दिया। फलस्वरूप प्रहरी सेवकगण उसके अतिशय अत्याचारों के मन ही मन विरोधी हो गये और रातोंरात जेल के फाटक खोलकर बालकृष्ण को गोकुल पहुँचाने में सफल हुए जिसने अपने ही मामा कंस का नाश कर दिया। इसी सत्य साधना से वसुदेव-देवकी ही नहीं यशोदा-नन्द भी अमर हो गये। भारत योगेश्वर कृष्ण को पाकर विश्वपूज्य बन गया। आप्त पुरुष कृष्ण का यही आदर्श वन्दनीय है।

१०. बड़े की अपेक्षा बड़प्पन से संवर्द्धन होता है– जिस आदमी का भरोसा स्वयं पर नही है, उसकी अच्छाई भी स्थिर अच्छाई नहीं होती। चुटकी भर से उसकी अच्छाई बुराई में बदल सकती है। सड़क हादसे में स्मृति खो चुके सैनिक को मृतमान कर उसकी पत्नी को पेंशन बाँध दी गई। दूसरे सड़क हादसे में सात साल बाद उसकी स्मृति लौट आई और वह अपने परिवार से आ मिला। मानव शरीर में सबसे बड़ा बृहस्पतिस्वरूप उसका मस्तिष्क ही है जो उसे हीन या महान् बनाता है। लौटते हैं रियो ओलम्पिक की ओर, स्त्री-पुरुषों से भरे पूरे दल की भारत ध्वज वाहिका का सम्मान विश्व स्तर पर किसे मिला? अल्पआयु सुकुमारी कन्या साक्षी मलिक को क्योंकि उसने कांस्य सही-प्रथम पदक जीता। उसके पिता व माता रोजी रोटी कमाने को बाहर रहते थे। साक्षी अपने दादाजी के साथ पली व बड़ी हुई। पहलवान दादा की मान प्रतिष्ठा से प्रभावित साक्षी ने पहलवान बनने का प्रण ले लिया। पहलवानी को शक्ति से अधिक क्षेत्रीय भक्ति प्रतिष्ठा एवं दादाजी की लोकप्रियता के बड़प्पन ने उसे पहलवान बना दिया। अब वह हरियाणा के 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ बेटी खिलाओ' की ब्राण्ड एम्बेसडर है। ब्राण्ड अम्बेसडर अर्थात् वृहत्तर संदेश वाहक के रूप में भ्रूण-हत्या, दहेज-हत्या, दुष्कर्म, अनाचार, अत्याचार के विरुद्ध कठोर निषेधात्मक वातावरण बनाना।

'मे दुहिता विराट' (ऋग्. १०/१५६/३) वेदादेश को चरितार्थ करने वाली बेटी पी.बी. सिन्धु, साक्षी मलिक के अतिरिक्त दीपा करमाकर और जीतू राय को भारत का सर्वोच्च सम्मान राजीव गाँधी खेल रत्न पारितोषिक प्रदान किया गया है जो उनके वेदोक्त विराटत्व का अभिनन्दन है। अब लौटिये गोवर्धन पर्वत की ओर। इसे गिरिराज भी कहा जाता है। यजुर्वेद २६.२१ के अनुसार 'उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत्।' अर्थात् गिरि व नदियों के समीप ईश्वर उपासना व विद्या वृद्धि में मनुष्य उत्तम बुद्धि व कर्मयुत होकर सुखी होता है। पर्वत-सरिता तो हो उसकी परिक्रमा भी होती रहे, किन्तु उपासना-साधना न हो तो सभी कुछ व्यर्थ हो जाता है। ऐसा ही एक भयंकर दृश्य गोवर्धन क्षेत्र मे देखने को मिलता है। संसार के लोग तो गोवर्धन की ओर रात-दिन दौड़ लगाते हैं किन्तु इसी के निकटवर्ती ग्राम देवसेरस में हत्याओं का सिलसिला बढ़ते देखकर सैंकड़ों परिवार वहाँ से पलायन करने को बाध्य हुए हैं। (दैनिक हिन्दुस्तान २२.८.१६)

निष्कर्ष यह है कि मनुष्य अपनी मानसी परिक्रमा करते हुए अपने गोलोक इन्द्रियों वाले देवस्थान शरीर को पराक्रमी बना लेता है तो मानो गोवर्धनधारी गोपाल का ग्वाल बाल पुरुषार्थी बनकर अपनी जीवन यात्रा को सफल बना लेता है।

देवनारायण भारद्वाज
वरेण्यम्, अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग,
अलीगढ़- २०२००१ (उ.प्र.)

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आर्ट गैलेरी का अवलोकन करने में भारत के प्राचीन ज्ञान को विश्व के समक्ष लाने वाले ऋषियों की जानकारी चारों वेदों के प्राकट्य करने वाले ऋषियों की महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत की गयी है। कृष्ण चरित्र, राम चरित्र और मेवाड़ दर्शन को चित्रों के माध्यम से सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवन गाथा चित्रों के माध्यम से बहुत सुन्दर तरीके से प्रस्तुत है जो अत्यधिक ज्ञानवर्धक है।

– ओम प्रकाश तिवारी, रेकी ग्रांड मास्टर, जयपुर

यहाँ आकर मुझे अपना स्वाध्याय का समय याद आ गया। इस पुण्य भूमि को नमन करता हूँ। मार्गदर्शक ने इन सभी चित्रों को जीवन्त कर प्रदर्शित किया है, उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और स्वयं स्वामी जी की शिक्षाओं को हृदय में स्थापित करके जा रहा हूँ।

– अश्विन सराफ

बहुत कुछ नया जानने का मौका मिला। कुछ ऐसी बात भी जानने को मिलीं जो कभी कहीं किसी से नहीं जानी थीं और सभी बातों में लॉजिक था, 'सच' देखा। Feeling happy and proud.

– ज्योति वर्मा पुत्री रक्षा स्वरूप वर्मा

आत्म निवेदन

सपने तो सपने होते हैं

हर व्यक्ति एक तर्काधारित समाज की बात करता है। हमारा संविधान भी अपेक्षा करता है कि समाज में ऐसा वातावरण सृजित हो जिसमें विवेक तथा तर्क की प्रतिष्ठा हो और अंधविश्वासों का समूल नाश। ऐसा भी प्रायः माना जाता है कि शिक्षा के प्रसार के साथ-साथ उक्त उद्देश्य की प्राप्ति संभव है। परन्तु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि शिक्षा का प्रसार भी अंधविश्वास को विनष्ट नहीं कर पा रहा है, बल्कि स्थिति यह बनती जा रही है कि 'मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की'। आज शिक्षितों की संख्या बढ़ती जा रही है इसमें कोई संदेह नहीं है पर आश्चर्य यह है कि अंधविश्वास भी अपने चरम पर पहुँच गया है। सोशल मीडिया ने तो इसे ऐसी गति दे दी है कि इस पर लगाम लगाना भी कठिन हो गया है। पहले संचार के सीमित अथवा व्ययसाध्य साधन होने के कारण समाचार देरी से तथा सीमित दायरे में पहुँचते थे पर अब तो कोई सीमा ही नहीं है। गणेश जी ने दूध पिया यह तो पाठकों को याद ही होगा, अभी कुछ दिन पूर्व बाल-कृष्ण की मूर्ति ने भी दूध पिया और मिनटों के अन्तराल में ही उस घर में लोग पहुँचने लगे। अंधविश्वासों के नए-नए तरीके भी आविष्कृत होने लगे हैं, जैसे टैरोकार्ड, जानवरों यथा मछली, आक्टोपस द्वारा की जाने वाली भविष्यवाणियों की नयी अथवा तोते द्वारा की जाने वाली पुरानी कहानी।

हमने सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से इन सबकी ओर यथाशक्य पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। अभी तीन चार दिन पूर्व नवलखा महल से घर लौट रहा था। एफ.एम पर एक कार्यक्रम आ रहा था जिसमें कोई स्वप्न विशेषज्ञा लोगों को उनके द्वारा देखे गए स्वप्नों के आधार पर उनका भविष्य बता रहीं थीं। अगर इसे स्वप्नवाणी नाम दें तो कह सकते हैं कि यह क्षेत्र अत्यन्त पुराना तो है पर कम प्रचिलित है। एक सज्जन अपना स्वप्न बता रहे थे कि वे प्रायः एक स्वप्न देखते हैं कि जब वे दुकान पहुँचते हैं तो शटर बन्द मिलता है। स्वप्न विशेषज्ञा ने सलाह दी कि उनके निकट सम्बन्धी मित्र आदि उनके विरुद्ध षड्यंत्र रच रहे हैं वे सावधान रहें। अब बताइये स्वप्न से इस निष्कर्ष का क्या सम्बन्ध है? पहले से परेशान वह वहमी व्यक्ति अब बहिन, पत्नी व मित्रों को शक की नजर से देख-देख कर हलकान हो रहा होगा तथा अपने पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में अनेक उलझनें उत्पन्न कर रहा होगा। परन्तु यह भी है कि समस्या और निष्कर्षों में कोई तार्किकता हो तो फिर वह अंधविश्वास ही कहाँ रहेगा। पाठकगणों के विचार के लिए कतिपय स्वप्नवाणियाँ यहाँ हम दे रहे हैं।

१. यदि आप स्वयं को जलती हुई आग अथवा कोयलों पर देखें तो आपको शत्रुओं द्वारा हानि हो सकती है।

२. सपने में सापों का काटने का मतलब आपको धन की प्राप्ति होगी।

३. सपने में आपने देखा कि आपके हाथ में धागा बँधा है तो आप पर कोई संकट आ सकता है।

४. यदि आपके हाथ में तलवार अथवा कोई अन्य अस्त्र है, तो आपका किसी से झगड़ा हो सकता है।

५. यदि आप-अपने हाथ में सोना देखें तो जो कार्य आप कर रहे हैं, उसे छोड़ देना चाहिए क्योंकि उसमें आपको असफलता ही हाथ लगेगी।

६. यदि आप सपनों में घोड़े देखते हैं, तो आपके लिए यह शुभ है परन्तु घोड़े काले हैं तो कोई संकट आने वाला है।

७. यदि आप सपने में बाज पक्षी को पकड़ लेते हैं, तो आप जो कार्य करने की सोच रहे हैं, उसमें अवश्य सफल होंगे।

वस्तुतः स्वप्न है क्या? हम जो कुछ भी देखते-सुनते हैं अथवा महसूस करते हैं वह हमारे मस्तिष्क में सुरक्षित हो जाता है। इनमें से ही कोई, जब निद्रा अत्यन्त प्रगाढ़ नहीं हुयी होती है अपने को प्रकाशित कर देता है, पर इनमें क्रमबद्धता अथवा व्यवस्था हो ऐसा आवश्यक नहीं। अतएव तारतम्य न बन पाने से प्रायः प्रातःकाल तक हम भूल जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि हम किसी अभिलषित कार्य को तो कर लेते हैं परन्तु लोकलाज अथवा अन्य कारणों से अन्य को दबा देते हैं यह दबी हुयी अभिलाषाएँ स्वप्न में यथावत् अथवा परिवर्तित रूप में प्रकट हो जातीं हैं। स्वप्न से व्यक्ति की मनोदशा का अनुमान लगाने की बात तो फिर भी समझी जा सकती है परन्तु 'स्वप्न में सांप काटे तो धन मिलेगा' जैसे कथन नितान्त अंधविश्वास के ही प्रतीक हैं। ऊपर वाले उदाहरण में व्यक्ति अपने व्यापार को लेकर चिन्ता तथा आशंकाओं से ग्रसित है यह तो समझा जा सकता है पर उसके मित्र षड्यंत्र करने जा रहे हैं ऐसे कथन का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

यद्यपि स्वप्न की चर्चा प्राचीन समय में भी मिलती है। कहा जाता है कि त्रिजटा राक्षसी ने लंका के जलने का स्वप्न देखा। पर इसमें आश्चर्यजनक क्या है? लंका की स्थिति, श्रीराम तथा किष्किंधा राज्य की सम्मिलित ताकत, रावण की मनोदशा तथा उसके अनैतिक कृत्य किसी भी संवेदन तथा विचारशील को वैसा ही स्वप्न दिखाने में सक्षम थे। त्रिजटा का स्वप्न सर्वथा स्वाभाविक था। पर ऊपर वर्णित स्वप्नों को आधार बना जो भविष्यवाणियाँ की गयीं हैं वे नितान्त अंधविश्वास हैं।

स्वप्न पर विद्वान् प्राचीन समय से विचार करते रहे हैं, यूनान के विचारक हिप्पोक्रेटस की तो अत्यन्त दिलचस्प सोच है। उनका मानना है कि निद्रा के समय आत्मा शरीर से अलग होकर विचरण करती है और ऐसे में जो देखती है या सुनती है, वही स्वप्न है। अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'पशुओं के इतिहास' में लिखा है कि केवल मनुष्य ही नहीं, अपितु भेड़, बकरियाँ, गाय, कुत्ते, घोड़े इत्यादि पशु भी स्वप्न देखते हैं। प्राचीन भारतीय दार्शनिकों के अनुसार, आत्मा चौरासी लाख योनियों में जन्म लेने और भ्रमण करने के बाद मनुष्य योनि प्राप्त करती है। स्वप्न के माध्यम से वह विभिन्न योनियों में अर्जित अनुभवों का पुनः स्मरण करती है। फ्रायड आदि अनेक मनोवैज्ञानिक इन्हें दमित अभिलाषाओं का प्रकाशन मानते हैं।

बेबीलोनिया के महाकाव्य 'एपिक आफ गिलगमेश' में एक विवरण मिलता है। गिलगमेश ने सपना देखा कि 'एक कुल्हाड़ा आसमान से गिरा'। लोग प्रशंसा और पूजा में कुल्हाड़े के चारों ओर एकत्र हो गए। गिलगमेश ने अपनी माँ के सामने कुल्हाड़ा फेंक दिया और फिर उसे पत्नी की तरह गले से लगा लिया।' उसकी माँ निनसुन ने सपने की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही कोई शक्तिशाली प्रकट होगा। गिलगमेश उसके साथ संघर्ष करेगा और उसे पराजित करने की कोशिश करेगा, लेकिन वह सफल नहीं होगा। अंततः वे करीबी दोस्त बन जाएँगे। उन्होंने जोड़ा, 'तुमने उसे एक पत्नी की तरह गले लगाया था, इसका मतलब यह है कि वह तुम्हें कभी नहीं छोड़ेगा'। इस हल में अनुमान भाग ज्यादा है फिर भी हथौड़े को पौरुष का प्रतीक तथा पत्नी को सर्व सहयोगिनी मान कुछ तर्काधारित बनाने की कोशिश की गयी है।

एक ऐसे ही स्वप्न का जिक्र मिलता है- एक व्यक्ति कुछ समय से बीमार था और उसका इलाज चल रहा था। एक दिन उसने स्वप्न देखा कि एक चिड़िया उसके घर में फंस गई है और बाहर निकलने के लिए पंख फड़फड़ा रही है। लेकिन जैसे ही वह चिड़िया घर से बाहर निकली, नीचे गिर गयी। उस व्यक्ति ने देखा कि वह चिड़िया इतनी कमजोर थी कि वह उड़ नहीं पा रही थी। इस स्वप्न का मतलब था कि वह व्यक्ति अपनी बीमारी से बहुत परेशान हो गया था व बाहर जाना चाहता था। लेकिन वह बहुत कमजोर भी हो गया था। उसे पूर्णतया से ठीक होने के लिए अभी और कुछ दिन चिकित्सा की आवश्यकता थी। यह तार्किक निष्कर्ष था।

इसी प्रकार सिकन्दर के भी एक सपने का जिक्र मिलता है। टीरियनों के खिलाफ युद्ध करते समय सिकन्दर ने सपना देखा कि एक ऐयाश (सैटर) उनकी ढाल पर नृत्य कर रहा था। इस सपने की इस प्रकार व्याख्या की गई थी- सैटर= सा टिरोस ('सूर तेरा हो जाएगा'), यह भविष्यवाणी करते हुए कि अलेक्जेंडर विजयी होगा। उपरोक्त दोनों प्रकरणों में फिर भी कुछ दिमाग लगाया गया है, परन्तु जिन भविष्यवाणियों का दिग्दर्शन हमने पहले किया है वहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है।

स्वप्न के बाबत एक अंतर्जालीय पत्र में एक अनुसंधान का हवाला देकर लिखा है-

एक रिसर्च में सामने आया है कि जब हम जागते हुए किसी चीज को देखते हैं और उस चीज का अवलोकन करते हैं तो वो हमारे अन्तर्मन में बैठ जाती है और अन्तर्मन में इस बात की पैठ ऐसी हो जाती है कि हमें वो चीजें सपने में दिखाई देने लगती

है। मूल बात यह है कि जो चीज हम देखते हैं, जो चीज हम सुनते हैं, जो चीज हम समझते हैं या जो चीज हम स्पर्श करते हैं सपनों का सम्बन्ध मात्र उन्हीं चीजों से होता है। यह मूल रूप से व्यक्ति की मानसिक दशा पर निर्भर करता है किस वक्त कौन-सा सपना आएगा कैसा आएगा और उसका क्या स्वरूप होगा। जैसा कि एक छोटे बच्चे को सपना आएगा तो वो अपने आस-पास उन्हीं चीजों या लोगों को देखेगा जिन्हें अभी तक वो अपने जीवन में देख चुका है।

कहा गया है कि जन्मांध स्वप्न नहीं देखता। कुछ दार्शनिकों का मानना है ७ वर्ष में दृष्टि खोने वाला बच्चा स्वप्न देखता है। पूर्वजन्म की स्मृतियों के आधार पर गर्भ में पल रहा बच्चा भी सपने देखता है, ऐसा माना जाता है।

उक्त रिसर्च में आगे कहा है कि अंधे व्यक्ति के सपने में चित्र नहीं होते बल्कि सिर्फ आवाज होती है और एक गूंगे व्यक्ति के सपने में आवाज नहीं होती और उसे सब कुछ वैसा ही दिखता है जैसा कि जीवन वो जीता है। यानी कि ये बात साफ तौर पर कही जा सकती है कि सपनों का सीधा सम्बन्ध हमारी दिनचर्या से होता है और जैसा जीवन हम खुली आँखों से जीते है वैसे ही सपने हमें बंद आँखों से दिखाई देते हैं।

हमें कैसे सपने आते हैं ये इस बात पर निर्भर करता है कि हम किस चीज के बारे में ज्यादा सोच रहे होते हैं। यानी कि अगर आपकी परीक्षाएँ पास आ रही हैं तो आप पूरा दिन उसी के बारे में सोचेंगे और आपको कुछ ही दिनों में वही सपना आएगा या फिर उससे मिलता जुलता लेकिन यह कहा जा सकता है कि सपना वही आएगा जो बातें हमारे दिमाग में गड़ी यानी कि अच्छे से बैठी होती हैं। इसलिए कहा है आप अपने सपनों में क्या करते हैं इससे अपने चरित्र को आँक सकते हैं। Judge your natural character by what you do in your dreams. **(Ralph w. emerson)**

आज तक सपनों के बारे में लगातार हो रही खोजों से सिर्फ यही तथ्य सामने आया है कि कहीं ना कहीं हम उन चीजों को जी चुके होते हैं या महसूस कर चुके हैं। सपनों के बारे में एक और बात अध्ययन में सामने आई है और वो है कि सपने आमतौर पर एक इंसान उसकी अपनी भाषा में देखता है जिसे वो पूरा दिन बोलता है, यानी की अंग्रेजी बोलने वाला इंसान अंग्रेजी में सपने देखेगा ।

अतः स्पष्ट है कि सपनों के आधार पर भविष्य कथन मात्र एक व्यापार है जिसमें तर्क तथा बुद्धि पूर्णतः नदारद है।

आप एक बात और विचार करें और जिसे प्रायः हम अपने ऐसे विषय से सम्बन्धित प्रत्येक लेख में उठाते रहे हैं कि जब भविष्य कथन कर ही दिया जाता है तो फिर उसका उपचार क्योंकर हो सकता है? हर प्रक्रिया में भविष्य की आपके मनोनुकूल उपचार-व्यवस्था का होना इसे ठगी का व्यापार सिद्ध करता है। स्वप्नवाणियों के व्यापार में भी इनकी उपस्थिति इस पूरे धंधे को ठगी के अंतर्गत परिभाषित करती है। इनमें से नीचे कुछ उपचार दिए हैं-

१. यदि स्वप्न ४ बजे के बाद देखा गया है और स्वप्न बुरा है, तो प्रातः उठकर बिना किसी से कुछ बोले तुलसी के पौधे से पूरा स्वप्न कह डालें। कोई दुष्परिणाम नहीं होगा। स्नान के बाद 'ऊँ नमः शिवाय' का १०८ बार जप करें।

२. हनुमान जी सब प्रकार का अनिष्ट दूर करने वाले हैं। बुरे स्वप्न का अनिष्ट दूर करने के लिए सुन्दरकांड, बजरंग बाण, संकटमोचन स्तोत्र अथवा हनुमान चालीसा का पाठ भी सायंकाल के समय किया जा सकता है।

३. यदि स्वप्न बहुत बुरा है और आपके घर में तुलसी का पौधा नहीं है, तो सुबह उठकर सफेद कागज पर स्वप्न को लिखें फिर उसे जला दें। राख नाली में पानी डाल कर बहा दें। फिर स्नान करके एक माला शिव के मंत्र 'ऊँ नमः शिवाय' का जप करें। दुष्प्रभाव नष्ट हो जाएगा।

स्पष्ट है कि ये उपचार सार्वभौमिक नहीं हैं। तुलसी, हनुमान जी, शिवजी के अभाव में कोई विदेशी स्वप्नोक्त भविष्य से न बच पायेगा। ऐसी स्थिति में इस समस्त गोरखधंधे पर हँसी क्यों न आए?

हम तो अन्त में इतना कहेंगे कि गहरी नींद के अभाव में स्वप्न आते हैं अतः उपयुक्त दिनचर्या का पालन ही अपेक्षित है। जो व्यक्ति अनावश्यक इच्छाओं, चंचल भावनाओं, उच्च आकांक्षाओं और भूत-भविष्य की चिन्ता से अपने को मुक्त रखते हैं, वही स्वप्न रहित गहरी निद्रा ले पाते हैं। फिर उन्हें तथाकथित स्वप्न व्याख्याताओं की कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी। सपनों की गम्भीर व्याख्या के पीछे भागना व्यर्थ है क्योंकि 'सपने तो सपने होते हैं।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

मानव जाति की समानता

सारी धरती के सभी मनुष्यों के शरीरों में विविध इन्द्रिययुक्त मुख, हाथ-कन्धों सहित धड़ और टांगों की संरचना एक सी है। आँख आदि इन्द्रियों की कार्य प्रणाली भी सभी में समान रूप से मिलती है। भौगोलिक दृष्टि से रंग और रूप का ही थोड़ा सा भेद होता है। अतएव एक देश में रहने वाले तथाकथित हिन्दू, ईसाई, मुसलमान को उस-उस रूप में अलग पहचाना कठिन होता है, जब तक वे अपनी मान्यता के अनुसार बाह्य चिन्हों को धारण नहीं करते।

सभी मनुष्यों के शरीरों में आंख, कान आदि इन्द्रियां एक से ढंग से एक सा कार्य करती हैं सभी के शरीरों की आन्तरिक प्रणाली एक से रूप में कार्य करती है। पाचन की परिपाक व्यवस्था भी समान रूप से चलती है। सभी इन्सानों के शरीर एक ही ढंग से माता-पिता द्वारा उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। सभी के शरीर एक ही प्रकृति, मूलतत्व से बने हुए हैं। इसीलिए सभी के खून का रंग लाल ही होता है, सभी की हड्डियां सफेद और मांस एक जैसा ही होता है। इसीलिए तो कहा है-

'अव्वल अल्ला नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।
एक नूर ते सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे।। - कबीर, गुरुग्रन्थ
इक माटी के भाण्डे। - रविदास
रविदास उपजहि इक बूंद सो सभ हि इक समान।
इक ज्योति सो सभ उपजहि तउ ऊंच नींच कह मान।।
सभ में एको आत्मा दूसरा कोई नां हि।
सभन को इक जात। मानस की जात सभै, एक ही पहचान बो।
एक ही स्वरूप सभै, एक ही बनाव है।' -गुरु गोविन्द सिंह

पृथिवी के सारे मनुष्यों के हृदयों या मस्तिष्कों में सुख, शान्ति और दूसरे से स्नेह, सहयोग, ईमानदारी का व्यवहार प्राप्त करने की इच्छा एक-सी ही होती है। कोई भी अपने साथ चोरी, गाली, बेईमानी आदि का दुर्व्यवहार होने पर खुश नहीं होता, सभी इससे दुखी होते हैं। ईश्वर को मानने वालों की दृष्टि से सभी एक ही खुदा के बनाए हुए बन्दे हैं और सभी की अजर-अमर रूप से आत्मा एक-सी है।

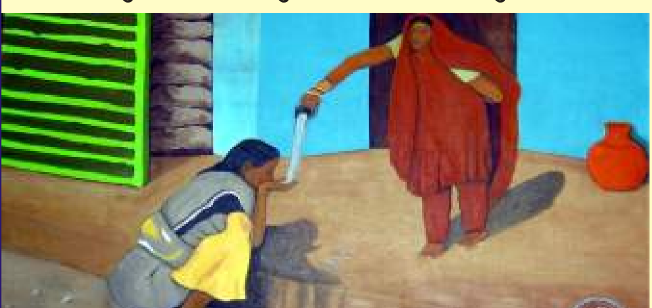

इसीलिए विशेष परिवार, कुल, वर्ग, सम्प्रदाय, प्रान्त, देश में जन्म लेने या किसी से सम्बद्ध होने मात्र से किसी में कोई अन्तर या अच्छा-बुरापन नहीं आ जाता। केवल जन्म, सम्प्रदाय, रूप, रंग, धर्म, भाषा, देश, श्रम के आधार पर किसी में कोई अन्तर नहीं होता। अपितु जो अन्तर होता है, वह संस्कार, सदाचार से ही होता है। अतः इस आधार पर एक-दूसरे से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध, मनमुटाव और भेदभाव नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे निर्दोषों से अन्याय एवं उनका निन्दनीय विनाश होता है। ऐसा करना मानव जाति की एकता को न मानना और उसका अपमान करना है।

एक मानव से दूसरे मानव में शिक्षा, योग्यता, संस्कार, गुण, कर्म से ही कुछ भेद होता है। अतः किसी की उच्चता, सम्मान की परख इनके आधार पर ही करनी चाहिए। इस आधार पर यदि परस्पर अन्तर हो, तो किसी को चुभने या बुरा मानने वाली बात नहीं होती। पर जब बिना उचित आधार के परस्पर भेदभाव किया जाता है, तो उससे घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, वैर, विरोध की भावना पनपती है, जो कि अशान्ति, असन्तोष और दुख, क्लेश, कलह का कारण बनती है। जैसे कि जन्म के आधार पर किया गया अन्याय एकलव्य और विशेष रूप से कर्ण के साथ महाभारत का कारण बना। अतः जीवन को सरल व सुखी बनाने के लिए सामाजिक व्यवहार में सभी को समानता का अवसर मिलना चाहिए। जिससे सभी को प्रगति का अवसर प्राप्त हो सके। इससे सामाजिक समानता के कारण जहां समाज को सभी का सहयोग प्राप्त होगा, वहां समाज इससे अधिक सुखी हो सकेगा।

वस्तुतः मानव समाज की स्थिति हाथ की अंगुलियों की तरह है। जैसे हर व्यक्ति के अपने हाथ की पांचों अंगुलियां भिन्न-भिन्न आकार, परिमाण की होती हैं। उन का स्थान और क्रम भी परस्पर भिन्न-भिन्न होता है, उनकी कार्य करने की शक्ति में भी स्पष्ट भेद प्राप्त होता है। इन पांचों अंगुलियों में से कोई छोटी होती है तो कोई बड़ी, कोई मोटी है, तो कोई पतली। परन्तु जब कार्य करने का अवसर आता है, तो कार्य के अनुरूप वे पांचों संगठित हो जाती हैं। लिखते समय उनका संगठन अलग ढंग से होता है, तो किसी चीज को उठाते हुए या पकड़ते समय उनका विन्यास भिन्न प्रकार का होता है। रक्षा के समय उनका सामंजस्य अपने ढंग से होता है। भिन्न-भिन्न आकार, प्रकार की होती हुई भी पांचों अंगुलियां इकट्ठी होकर उस-उस कार्य में भाग लेती हैं।

तब ये आपस के भेदभाव, रूप आदि को भूलकर संगठित हो जाती हैं। मानव समाज के सामाजिक कार्यों में भी सभी वर्गों की यही स्थिति होनी चाहिए।

समान सामाजिक भावना के विपरीत जब कोई संकीर्ण दृष्टिकोण रखता है, तब वह किसी विशेष वर्ग को अपनाता और अधिक अच्छा मानता है। इससे परस्पर घृणा, ईर्ष्या, द्वेष और विरोध का व्यर्थ विवाद या दूरी ही बढ़ती है। अन्यथा सभी के प्रति समान सामाजिक भावना रखने से सभी के साथ अपनेपन और समानता की भावना उभरती है। महर्षि दयानन्द के इस विषय में ये विचार बहुत स्पष्ट ही हैं। तभी तो लिखा है-

'एक मनुष्य जाति में (को) बहका कर, विरुद्ध बुद्धि करा के, एक दूसरे को शत्रु बना, लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहिः है। - भूमिका पृ. ६

जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं।

- सत्यार्थ प्रकाश भूमिका पृ. ६

चारों वर्णों को परस्पर प्रीति, उपकार, सज्जनता, सुख, दुःख, हानि, लाभ में एकमत्य रहकर राज्य और प्रजा की उन्नति में तन, मन, धन का व्यय करते रहना।

- सत्यार्थ प्रकाश समु. ४, पृ. १००

जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योन्य को आनन्द न होगा।

- सत्यार्थ प्रकाश अनुभूमिका- १, पृ. २३५

दशकों की साधना का सुफल

वेद-विज्ञान आलोक का लोकार्पण

महामहिम उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू द्वारा ''वेद-विज्ञान आलोक'' का विमोचन

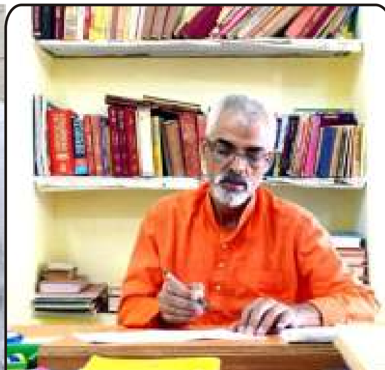

२० जून २०१८ को 'श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास, वेदविज्ञान मंदिर, भागलभीम, भीनमाल के संस्थापक अध्यक्ष आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक के विशालकाय ग्रन्थ 'वेद-विज्ञान आलोक' का भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम वेंकैया नायडू जी द्वारा विमोचन किया गया। यह ग्रन्थ ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य है। यह ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के वैदिक सिद्धान्त को प्रस्तुत करता है। २८०० पृष्ठ का यह ग्रन्थ कुल चार भागों में प्रकाशित है। इस अवसर पर संस्था के ट्रस्टी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, ग्रन्थ के सम्पादक व संस्था के उपाचार्य श्री विशाल आर्य, श्री अभिषेक आर्य, श्री किशन लाल गहलोत, श्री जय सिंह गहलोत (जोधपुर) आदि गणमान्यजन उपस्थित थे।

अग्निसम व्रत धारण करके,
दी प्रकाश को ऊँचाई।
दयानन्द की दिव्य सोच,
पाश्चात्य जगत् तक पहुँचाई।
तुम अतिशय प्रतिभा के सागर,
छलकादी वेदों की गागर।
जिज्ञासु जन पावें मंजिल,
'वेद-विज्ञान आलोक' को पढ़कर।।

- अशोक आर्य

राजस्थान के लोकायुक्त जस्टिस एस. एस. कोठारी को ''वेद-विज्ञान आलोक'' भेंट करते हुए

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य को ''वेद-विज्ञान आलोक'' भेंट करते हुए

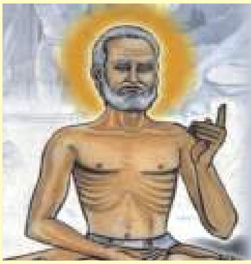

दण्डी स्वामी विरजानन्द और गुरुधाम

भारत की प्राचीनतम सप्त पुरियों में यमुनातट पर अवस्थित मथुरा नगरी का नाम सर्वमान्य है। योगिराज भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली होने के साथ ही यह नगर विविध जातियों, धर्मों तथा सम्प्रदायों की सांस्कृतिक, सामाजिक व कलात्मक परम्पराओं और ज्ञान विज्ञान का भी विख्यात केन्द्र रहा है। यही कारण है कि विभिन्न स्थलों से आये विशिष्ट व्यक्ति भी ब्रज में आकर सम्पूर्ण आस्था सहित निवास करते रहे हैं जिससे नगर की गरिमा भी बढ़ी और महत्व भी।

दण्डी स्वामी विरजानन्द और उनके शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती ब्रज में पधार कर यहीं के हो गए। श्री दण्डी जी पंजाब से मथुरा पधारे और संस्कृत की व्याकरण पाठशाला स्थापित की जबकि दयानन्द गुजरात से यहाँ आये और दण्डी जी से दीक्षा प्राप्त कर आर्यसमाज की स्थापना की और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का संकल्प लिया। दण्डी जी के पूर्वज दयालदास सियालकोट व अमृतसर के मध्य रावी नदी के तट पर स्थित गुरदासपुर जनपद के अन्तर्गत गोबिन्दपुर गाँव में रहते थे। सम्वत् १८३५ के लगभग जालंधर के कर्त्तारपुर नामक स्थान पर पिता नारायण दत्त के यहाँ इनका जन्म हुआ। इनके बचपन का नाम ब्रजलाल था जो ६ वर्ष की आयु में नेत्रहीन हो गए तथा ८ वर्ष की आयु से पूर्व ही मातृ-पितृ विहीन भी हो गए। अनाथ बालक ने इधर-उधर घूमकर व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया और ऋषिकेश जा पहुँचे जहाँ उन्होंने गंगा में खड़े होकर एक लाख गायत्री मन्त्रों का अनुष्ठान किया। तदनन्तर पांच वर्ष के पश्चात् हरिद्वार में पूर्णानन्द सरस्वती से विधिवत् संन्यास की दीक्षा प्राप्त कर इन्होंने विरजानन्द नाम ग्रहण कर लिया। तदनन्तर काशी जाकर संस्कृत में दक्षता प्राप्त की। बाईस वर्ष की आयु में विरजानन्द कलकत्ता गए और तत्पश्चात् सोरों, भरतपुर, मुरसान, बेसवां होते हुए अलवर जा पहुँचे और वहाँ के महाराजा विनयसिंह को संस्कृत का ज्ञान कराया। अन्ततः यह मथुरा चले आये और यमुना के विश्राम घाट के समक्ष गताश्रम मन्दिर में निवास करने लगे। बाद में वह सतघड़ा गली के निकट ब्रजनाथ सरीन के मकान पर पहुँचे और तीन पैसे प्रतिमास किराया देकर संस्कृत की पाठशाला चलाई। जहाँ उन्होंने पं. उदयप्रकाश, दयानन्द व जुगलकिशोर को अष्टाध्यायी व्याकरण का प्रशिक्षण दिया। स्वामी दयानन्द १४ नवम्बर १८६० से ३० अप्रैल १८६३ तक इसी पाठशाला में रहे। सम्वत् १८८१ में महर्षि दयानन्द जन्मशताब्दी के अवसर पर पाठशाला की यह सम्पत्ति ब्रजनाथ सरीन के अधिकार में थी, उस समय यह निश्चय किया गया कि इस स्थान पर विरजानन्द स्मारक स्वरूप पुस्तकालय व वाचनालय स्थापित किया जाये किन्तु जर्जर अवस्था में होने पर भी इस सम्पत्ति को आर्यसमाज के हाथों बेचने पर सरीन राजी न हुआ। बाद में माननीय उच्चतम न्यायालय के हस्तक्षेप करने तथा महाराजा कर्णसिंह छोंकर के अथक सहयोग से आर्य समाज को इसका स्वामित्व प्राप्त हो गया।

दिनांक २५ दिसम्बर १९५९ शुक्रवार को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने इस प्रस्तावित गुरुधाम का अपने कर कमलों द्वारा विधिवत् शिलान्यास करते हुये यह उद्घोष किया कि यहाँ वेदों पर अनुसंधान कार्य होगा। तदन्तर १६ फरवरी १९८५ ई. रविवार को तत्कालीन उप राष्ट्रपति बी. डी. जत्ती द्वारा उस स्थान पर निर्मित पाँच मंजिला गुरुधाम लोकार्पित किया गया। तभी से उस क्षेत्र का नाम विरजानन्द बाजार रख दिया गया। इसी भवन की मूल कुटी से अपने प्रशिक्षणार्थी स्वामी दयानन्द के साथ वह यमुना के जिस घाट पर स्नान व यज्ञादि हेतु जाया करते थे, उस घाट का नाम भी स्वामी घाट के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

पाठकों को सम्भवतः यह जानकर आश्चर्य होगा कि विरजानन्द एक दक्ष सितार वादक भी थे। वह शतरंज खेल में माहिर थे और बालूशाही व बीदाना अनार के शौकीन थे। प्रज्ञाचक्षु होने के कारण शतरंज में वह अपनी चाल नैनसुख जड़िया से चलवाते थे। वह अपने मस्तिष्क में बिसात बिछा लिया करते थे। संस्कृत पाठशाला में प्रायः दयानन्द ही सफाई करके बिस्तर लगाते और पानी भरा करते थे। एक बार गुरुजी के चरणों में कुछ कूड़ा लग गया, बस फिर क्या था क्रोधित हो कर उन्होंने तुरन्त दयानन्द की वज्रसम पीठ पर कर्त्तव्य पालन में प्रमाद करने के कारण लात मार दी। इस पर विनम्र शिष्य ने गुरुजी से क्षमा याचना की और रातभर उनके चरणों को भी दबाया।

अध्ययन पूर्ण करने के उपरान्त स्वामी दयानन्द ने उन्हें गुरु दक्षिणा में मात्र लौगें ही नहीं वरन् गुरुजी की इच्छानुसार ये वचन भी दिया कि वह अपने शेष जीवन में आर्ष ग्रन्थों का प्रचार-प्रसार करते हुये समाज में व्याप्त अंधविश्वासों व मिथ्या मतमतान्तरों का निराकरण करेंगे। सकल वेदों के ज्ञाता दण्डी उपाधि वाले व्याकरण सूर्य प्रज्ञाचक्षु गुरुवर स्वामी विरजानन्द ८९ वर्ष की आयु में १४ सितम्बर १८६८ ई. को कैवल्य के विशाल बदन में समा गए।

- डॉ. सत्यदेव आजाद
२३१३ अर्जुनपुरा डीगगेट, मथुरा (उ. प्र.)

नमो कप की शानदार सफलता

क्रिकेट के माध्यम से माननीय प्रधानमंत्री जी की योजनाओं को जन-जन तक पहुँचाने का नूतन प्रयास

भारत जैसे क्रिकेट प्रेमी देश में वर्षभर में क्रिकेट टूर्नामेंट होते रहते हैं। पर कोई क्रिकेट टूर्नामेंट जनोपयोगी योजनाओं को समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचाने का माध्यम बन जाए यह संभवतः प्रथम बार ही हुआ है। यह नूतन सोच युवा उद्यमी प्रवीण जी रातलिया की रही। टीमों का नाम माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रवर्तित जन-योजनाओं के नाम पर रखा गया। टूर्नामेंट में समाज के हर वर्ग को प्रतिनिधित्व दिया गया। नतीजा हुआ कि सन्देश घर-घर तक पहुँचा।

इस बार के नमो कप क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब 'स्वच्छ भारत' की टीम ने जीता है। टीम 'स्वच्छ भारत' ने टीम 'सुकन्या समृद्धि' को रोमांचक मैच में 6 विकेट से हराया। इस मैच में मैन ऑफ द मैच का खिताब रजत छापरवाल को दिया गया। पूरे टूर्नामेंट का मैन ऑफ द सीरीज अवार्ड सोनू गुस्सर को, बेस्ट बैट्समैन अवार्ड निखिल डोरू को तथा बेस्ट बॉलर का अवार्ड अभिषेक गुस्सर को प्रदान किया गया। नमो कप का सम्मान एवं समापन समारोह 2 जून, शनिवार को शाम विवेकानन्द सभागार सुखाड़िया यूनिवर्सिटी, उदयपुर में भव्य समारोह में हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि बॉलीवुड एक्टर विनीत कुमार सिंह (विनीत कुमार सिंह गैंग्स ऑफ वासेपुर, अगली, बाम्बे टॉकीज, देवदास आदि फिल्मों में रोल कर चुके हैं। विनीत कुमार सिंह राष्ट्रीय स्तर के वॉलीवाल खिलाड़ी भी हैं) एवं सांसद अर्जुन लाल जी मीणा उपस्थित थे।

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०७/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	म १		त १	■	२ अ	२	स्था	२	र २
३	३	३ र	४	रो ४		४	४ र	५	हीं ५
६ त्रि	६	६	द	६	■	७ अ	७	रो ७	७

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. अपने आत्मा को परमात्मा के आज्ञानुकूल क्या कर देना चाहिए?
२. प्रकृति परिणामिनी होने से क्या हो जाती है ?
३. जो भक्तजन ईश्वर की आज्ञानुकूल चलते हैं उनको क्या करने की सामर्थ्य परमात्मा में है ?
४. सत्पुरुषों का तन-मन किस कार्य के लिए होता है?
५. ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा करता है वा नहीं?
६. ईश्वर को कैसा कहना मूर्खता का कार्य है?
७. ब्रह्म और ईश्वर परस्पर कैसे हैं?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१८ का सही उत्तर

१. आत्म २. परमेश्वर ३. यजुर्वेद ४. अवतार
५. न्याय ६. स्वतन्त्र ७. स्वतन्त्र

"विस्तृत नियम पृष्ठ १९ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अगस्त २०१८

दुःख क्या है? व उसका निदान

परम पिता परमात्मा ने संसार रचा तो यहाँ जीव हेतु दो स्वरूप घड़े अच्छा-बुरा, दिन-रात, स्त्री-पुरुष, सुख-दुःखादि। मानव केवल सुखाभिलाषी है, उसे दुःख पसन्द नहीं। मानव कर्म वो करेगा जो दुःख के जनक हैं बदले में सुख की इच्छा करता है, सो संभव नहीं। परमात्मा ने मानव में चित्त एक ऐसा यंत्र लगा दिया है जो मानव के कर्मों का लेखा-जोखा संग्रहित करता रहता है। परमात्मा की उस व्यवस्थानुरूप मानव मात्र भोग करता है। मानवयोनि श्रेष्ठ योनि होने पर भोग के साथ योग करता हुआ अपना जीवन ईश्वर के समीप लाकर मोक्ष भी पा सकता है। लेकिन यहाँ दुनिया में मानव नाना दुःखों से ग्रसित है। उनको दुःखों से छुटकारा मिले, उसका उपाय क्या?

सबसे पहले हम दुःख को समझते हैं तो सुख अपने आप समझ में आ जावेगा। दुःख को एक वाक्य में प्रकट करना 'प्रतिकूलता ही दुख है'। अधिक स्पष्टता के लिए यों कहें कि इष्ट का वियोग तथा अनिष्ट की प्राप्ति ही दुःख है। शास्त्रों में दुःख तीन प्रकार के बताए हैं। दैहिक-शरीर से सम्बन्धित, दैविक-ईश्वर सत्ता से सम्बन्धित, भौतिक-संसार के सुखों से सम्बन्धित। यों हम दुनिया वालों ने कितने ही प्रकार के दुःख मान लिए हैं। हाँ कुछ दुःख ऐसे हैं कि जिन पर हमारा कोई अधिकार नहीं, कोई वश नहीं। लेकिन कुछ दुःख ऐसे हैं जिन्हें हम स्वयं पैदा कर लेते हैं। जिन पर हमारा अधिकार है और हम चाहें तो उन्हें स्वयं दूर कर सकते हैं। उनके लिए भैरू, भवानी, भगवान, सन्तों-फकीरों से याचना कर उनके समक्ष गिड़गिड़ाने की क्या जरूरत है। तो आओ! समझें ऐसे दुःखों को जिन्हें मानव स्वयं घड़ता है, पैदा करता है।

१. माताएँ अपने शिशुओं को चूहे (उन्दरा) बिल्ली, भूत, डायन, बाबा आदि से बचपन में डराकर ऐसे कुसंस्कार भर देती हैं जो भ्रम के वशीभूत होकर भूत-प्रेत-डायन आदि से बड़ा होने पर भयभीत होना और केवल काल्पनिक चिन्ताओं के द्वारा अपने मन को दुखी करना। कितना कमजोर बना देती हैं माताएँ अपनी सन्तानों को। साथ ही संस्कार विहीन भी। एक बालक रो रहा है माँ पूछती है क्या हुआ? बालक- नाक पर मक्खी बैठी है। माँ कहती है- रोता क्यों है? उसे उड़ा दे। बालक कहता है एक नहीं दो-दो मक्खियाँ बैठी हैं। सोचो ऐसे बालक क्या उन्नति करेंगे। उन्हें दुःख किस रूप में प्रभावित करेगा? सोचें जरा?

दूसरे स्थान पर कुछ ऐसे दुःख हैं मानव अपनी ऐसी इच्छाएँ निर्मित कर लेता है जिनकी पूर्ति उससे संभव नहीं, अपनी शक्ति, सामर्थ्य व परिस्थिति से बहुत बढ़ चढ़कर 'शेखचिल्ली' की तरह इच्छाएँ खड़ी करना। उनकी पूर्ति न होने पर चिन्तित होकर रोना-पीटना। या उनकी पूर्ति हेतु चोरी, भ्रष्टाचार, मिलावट, धोखाधड़ी व हत्या तक कर बैठना। फिर भगवान को कोसना।

३. तीसरे प्रकार के दुःखों को मानव झूठे अभिमान प्रदर्शन के कारण न्यौता देता है। जीते जी माता-पिता की सेवा-सुश्रुषा नहीं की, नहीं करना।

समय समय पर चाय, पानी, भोजन की व्यवस्था को लेकर वे व्याकुल रहे, मर गए। उनके मरने के बाद मृत्युभोज (मौसर नुक्ते) में ५ प्रकार की मिठाईयाँ और लम्बा चौड़ा खर्च। झूठी वाहवाही लूटने के लिए। समाज भी इस कृत्य का बहिष्कार नहीं करता। न ही सुझाव देते बल्कि और कर्ज में लदे ऐसा वातावरण बना देंगे। बहन-बेटियाँ भी मोटे मौसर हेतु दबाव बनायेंगी। नाक की बात है। कर्ज में डूबेगा, पैतृक सम्पत्ति बेचेगा और दुःखी होगा। इस दुःख के

लिए भगवान क्या करे?

४. इस क्रम में वे दुःख आते हैं जो सृष्टि नियम के विरुद्ध कार्य करना, वेद आज्ञा के विरुद्ध चलकर दुःख पैदा कर लेना। बाल विवाह, विधवा दुर्दशा, वृद्धों की सेवा न करना, गौ सेवा से विमुख होना, सूर्योदय के पश्चात् देर तक शयन करना, रात्रिविलम्ब से सोना। इस कारण मानव शरीर पर जो प्रभाव पड़ता है व बीमारियाँ घेरती हैं इसके लिए भगवान को कोसना बुद्धिमता नहीं। वर्तमान में हम यह गृहस्थाश्रम में अच्छी तरह देख सकते हैं। ये सारे दुःख मानव निर्मित हैं।

वेद की आज्ञा है संस्कारयुक्त गृहस्थ सजे। आज संस्कारों की घोर उपेक्षा हो रही है। सोलह संस्कारों में से ४-५ संस्कार समाज में जीवित हैं। नामकरण, चूड़ाकर्म, उपनयन, शिक्षा प्रवेश व विवाह, अन्त्येष्टि। विवाह जो सभी संस्कारों में श्रेष्ठ व ज्येष्ठ है, उसकी किस रूप में मजाक हो रही है विचार करें। घरवालों को खाना खिलाने की चिन्ता, पंडित को अतिशीघ्र आगे की पीछे-पीछे की आगे क्रिया कर वर वधू को, यजामानों को बुद्धू बनाकर और इतिश्री कर लेना। कहीं कहीं वैवाहिक रस्म के

पूर्व ही वर व वधू मंचासीन हो जाते हैं जबकि उनकी वैवाहिक रस्में पूर्ण नहीं होती। न ही भावर पड़ी, मांग भरी, न ही सुहागन का शृंगार। समाज और उपस्थित गणमान्य समाजबन्धु उन्हें वर-वधू के रूप में आशीर्वाद भी दे देते हैं। जबकि वे भोज के बाद वैवाहिक रस्म पूरी कर वास्तविक रूप से वर वधू की पात्रता धारण करते हैं। ये सारा दृश्य दुःख का कारण ही बनता है। वैवाहिक संस्कार में दस-बीस महानुभावों की उपस्थिति ही नजर नहीं आती। जो ब्रह्मचर्य आश्रम में थे अब गृहस्थ की दीक्षा ले रहे हैं। उनको गृहस्थ का पूर्ण ज्ञान नहीं होना गृहस्थ की कलह का कारण बनता है। ऐसे में जो दुःख उत्पन्न होता है उसके लिए भगवान क्या करें?

वेदाज्ञा है किन लोगों को गृहस्थाश्रम में प्रवेश का अधिकार है। जो युवक पराक्रमी हो, हृदय में उदारता, मेधा बुद्धि का धनी तथा मन हर्ष से भरा हो। ऐसे पराक्रमी युवक के लक्ष्मी चरण चूमती है। वहीं वेदाज्ञा है- **ब्रह्मचर्येण तपस्या देवा मृत्युमपाघ्नत**- देवता ब्रह्मचर्य और तप से मृत्यु को सदा मार हटाते हैं। लेकिन आज युवाओं का ब्रह्मचर्य देख लो। आँखें धंस गई, चेहरा चिपका हुआ, हाथ-पैर कीर्तन कर रहे। गुस्सा नाक पर ही बैठा मिलेगा। छोटे-मोटे रोगों से घिरा होना गृहस्थाश्रम की आज आन-बान-शान हो गई।

"परमात्मा से जितना गहरा सम्बन्ध होगा, सुख की मात्रा उतनी ज्यादा बढ़ेगी।"

वेदाज्ञा है कि वधू घर में आए तो सास का कर्तव्य है कि वह वधू से कहे तुम महारानी बनकर घर में रहो। किस प्रकार का व्यवहार परिजनों के साथ करना है। मीठी व हितकारी वाणी का प्रयोग करना है। गृहस्थाश्रम की गाड़ी मिलकर खींचते हुए प्रिय वचन बोलते हुए प्रभु की ओर चलना है तथा कई प्रकार की रूढ़ियों के बंधन में रीति रिवाज में उलझ कर, जिनका न वैदिक महत्व है न वैज्ञानिक, न ही धार्मिक ही केवल नाक कट जाने का भ्रम व अज्ञात भय के कारण उन्हें करता है व दुःख भोगता है।

पाँचवे क्रम पर व्यक्ति अपने आपको विवश पाता है और दुःख भोगता है। जैसे भूकम्प, वायु प्रकोप, आँधी-तूफान, राजनैतिक परिस्थितियों का बिगड़ना, अतिवृष्टि, अल्पवृष्टि शीत-प्रकोप, ओलावृष्टि आदि। पाँचवे क्रम पर दुःख तथा अन्य दुःख पर हम विचार करें तो ४ दुःख ऐसे हैं जो मानव निर्मित हैं। दार्शनिक बुद्धि बहुत कुछ कह देगी। तो क्यों ना दार्शनिक बुद्धि द्वारा दुःख की विवेचना करें? ताकि वह तत्व ज्ञात हो सके कि दुःख है क्या? हमारे जितने भी ग्रन्थ हैं उनकी रचना हुई ही इसलिए कि हर प्रकार के दुःखों का अन्त कर सकें। कारण मानव समाज दुःखों से घिरा नजर आता है, क्योंकि दुःखों का निर्माण तो मानव स्वयं कर लेता है। सुख भोगते हुए उसे दूसरों के सुखों से ग्लानि होने लगती है। स्वयं के दुःख से मानव इतना दुःखी नहीं जितना और के सुख से। ईर्ष्या, जलन से मानव को मुक्त होकर मन को संतोष की स्थिति में स्थिर करना होगा।

मूल दुःख तीन प्रकार के कहे हैं ताकि इनकी जानकारी अर्जित कर उनका अन्त कर सकें। दैहिक, दैविक व भौतिक दुःखों से तापों से छुटकारा पाने की बात वेदशास्त्रों में वर्णित है। संसार दुःखमय नहीं, इसे प्रयोगशाला तपोभूमि कहा है।

आज्ञा दी है इन दुःखों को दुःख समझे ही नहीं, दुःखों में दुःख मानना ही दुःख है। दुःखों को तप समझकर, प्रसन्नतापूर्वक धैर्य, साहस वीरता से सहन कर मानवता का परिचय दे। वही मानव यह सोचे कि यह दुनिया सुख भोग का साधन नहीं, यह दुनिया तो मानव श्रम करने, तप करने और दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति के लिए धरती पर आया है। अतः इस दृश्यमान विकृत हुई प्रकृति से अपना सम्पर्क तोड़कर सुखसागर परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ लिया जाये। सो मानव के अपने अधिकार में है कि वह दुख के मूल कारण प्रकृति के संयोग को अपना ले या सुख के मूल परमात्मा तत्व से सम्पर्क जोड़ ले। परमात्मा के साथ जितना गहरा सम्बन्ध होगा, सुख की मात्रा उतनी ज्यादा बढ़ेगी। हाँ यहाँ एक बात याद रखना है सुख चाहते हैं तो सुख बांटो, अपने सामर्थ्य के अनुसार दुखियों का दुःख दूर करने का प्रयत्न करो। जिसका फल सुख ही मिलेगा।

परमात्मा अविनाशी वैद्य है। उसी के पास परम औषध है। उसी के पास दुःख, पाप, रोग, शोक, चिन्ता को दग्ध कर देने की, जलाने की क्षमता है, सामर्थ्य है। हमें केवल इतना करना है कि उस प्रभु पर प्रबल निष्ठा हो, तपोमय जीवन हो, सम्यक् ज्ञान द्वारा बुद्धि ऋतम्भरा प्रज्ञा बना लें, शरीर तथा मन ब्रह्मचर्यमय हो। पवित्र शुद्ध बनने का यत्न करना होगा, फिर देखो जीवन में दुःख कहाँ रहेगा। रामराज्य को लेकर तुलसीदास जी ने बात कही कि- **'दैहिक, दैविक, भौतिक तापा, रामराज्य नहीं काहु व्यापा।'** राम मर्यादित जीवन जीने वाले कुशल नृपति हुए हैं। उनका अनुसरण उनकी प्रजा ने किया। कारण भगवान राम ने धर्म को कभी त्यागा नहीं। धर्ममय जीवन जिया। इसलिए रामराज्य आज भी याद आता है। भगवान कृष्ण ने भी धर्ममय जीवन जिया है। तभी तो अपने सुयश के कारण हमारे बीच जीवित हैं। हम राम-कृष्ण को तो मानते हैं पर राम-कृष्ण की नहीं मानते। इनकी मानते, इनके जीवन से प्रेरणा ले जीवन जिएँ तो दुःख नहीं होगा। हम दुःख में ईश्वर को याद करते हैं, सुख में नहीं। सुख में ईश्वर को भूलें नहीं तो चित्त में विषयवासनाओं का जो कूड़ा-करकट भरा पड़ा है, वो भस्म हो जायेगा। उस ईश्वर के निकट पहुँचने पर मानसिक, आत्मिक व शारीरिक दुःख दूर हो जावेंगे इसमें कोई संशय नहीं है। परमात्मा ही सुख का मूल है। अतः मूल से जुड़ें व जो दुःख हमारी बुद्धि अनुसार हम उत्पन्न कर लेते हैं, उन्हें छोड़ते हुए परिवार व समाज को, राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने का प्रयास करते हुए जीवन जीयेंगे। ऐसी आशा है। इति शुभम् भूयात्।

- डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

• **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

• सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र कीमत ₹ 45 में

४००० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश

अब ४००० रु. सैकड़ा

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब

एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें

''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

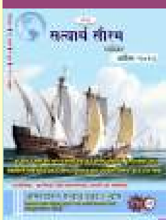

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ १९ पर देखें।

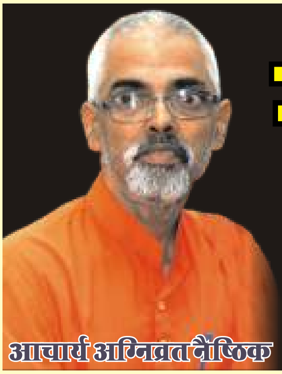

सबका आदि मूल परमेश्वर है।

इस सृष्टि में जो भी ज्ञेय पदार्थ व उसके जानने का साधन ज्ञान है, उसकी उत्पत्ति कैसे हुई, यह प्रश्न सृष्टि के आदि काल से ही मानव मस्तिष्क में उत्पन्न होता रहा है। संसार के सभी ईश्वरवादी संप्रदाय निश्चित रूप से यह मानते हैं कि इन दोनों का आदिमूल परमात्मा है। वेद, प्रचलित पुराण, कुरान, बाईबल आदि सभी ग्रन्थ इस बात पर एकमत हैं, भले ही ईश्वर के स्वरूप के विषय में मतभिन्नता है। इसी एक सत्य को प्रतिपादित करते हुए आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने प्रथम नियम में लिखा-

''सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।''

महर्षि का यह वाक्य अत्यन्त सारगर्भित एवं स्पष्ट है पुनरपि बड़े दुर्भाग्य का विषय है कि बड़े-बड़े सुपठित आर्यजन यहाँ तक कि व्याकरणादि शास्त्रों के निष्णात विद्वान् भी इस वाक्य का अर्थ समझने में भ्रान्त होते देखे जाते हैं। एक ऐसे ही निष्णात विद्वान् ने अपने द्वारा सम्पादित मासिक पत्र के संपादकीय में इसे ...''सत्य, विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं...'' लिखकर विद्या तथा पदार्थ विद्या, ये दो प्रकार की विद्याएँ बताई हैं। तथा इन दोनों को सभी सत्य ज्ञान का साधन बताया है। इन बन्धु की समझ में यह साधारण बात नहीं आयी कि 'पदार्थ' से पूर्व 'जो' सर्वनाम किस संज्ञा से सम्बन्धित है? ये सत्य को जानने का साधन इन विद्याओं को बता रहे हैं, तब 'जो' सर्वनाम सत्य के साथ प्रयुक्त होगा। तब वाक्य इस प्रकार होगा.. सब सत्य जो विद्या और पदार्थविद्या से जाने जाते हैं,....'' महर्षि ने 'सत्यविद्या' जो समस्त पद के रूप में प्रयुक्त किया है, उसका यहां कोई अर्थ ही नहीं रहेगा जबकि 'सत्य' व 'विद्या' पदों के मध्य 'जो' आने पर महर्षि के वाक्य का स्वरूप ही बदल जायेगा। क्या किसी को भी यह अधिकार है कि वह महर्षि के वाक्य को ही बदलने की मनमानी करे। महर्षि के वाक्य का अर्थ न जान सके, तो वाक्य ही बदल दिया।

उधर कोई महानुभाव यहाँ सत्यविद्या को एक पद तथा पदार्थविद्या को अन्य एक पद मानकर सत्यविद्या व पदार्थविद्या इन दो प्रकार की विद्याओं का मूल परमेश्वर को मानते हैं। इन महानुभावों में भी वाक्य को समझने की योग्यता नहीं है। इन्हें 'जो' सर्वनाम दिखाई ही नहीं देता। इस प्रकार की मिथ्या व्याख्या भी मैंने एक आर्य पत्रिका में देखी है। मैं ऐसे विद्वान् लेखकों की अज्ञानता को दूर करते हुए भी उनके सम्मान की रक्षा हेतु उनका नामोल्लेख करना उचित नहीं समझता।

एक बार ऋषि उद्यान, अजमेर में एक वृद्धा माता, जो सेवानिवृत्त प्राचार्या थीं, तथा अनेक विद्वानों के सत्संग का लाभ उठाती रही थीं, ने भी ऐसी ही शंका प्रस्तुत की थी।

इन भ्रान्त धारणाओं की चर्चा के उपरान्त हम महर्षि के वाक्य को यथावत् विचारने का प्रयास करते हैं-

''सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।'' यहाँ स्पष्ट ही 'सत्य' पद 'विद्या' के साथ विशेषण के रूप में जुड़ा हुआ है। और 'पदार्थ' विद्या पद से पृथक् पद है। 'जो' सर्वनाम 'पदार्थ' संज्ञा के साथ संगत है। इस द्वितीय 'विद्या' पद के साथ सत्य विशेषण नहीं है परन्तु यहाँ लुप्त रूप में इसके साथ जुड़ा अवश्य है अर्थात् यह 'विद्या' पद पूर्व में आये 'सत्यविद्या' के लिए ही प्रयुक्त है। यहाँ सम्पूर्ण वाक्य का अर्थ है कि सम्पूर्ण सत्यविद्या एवं जो पदार्थ उस सत्यविद्या से जाने जाते हैं, का आदिमूल परमेश्वर है। यहाँ 'सत्यविद्या' पद वेद की ओर संकेत कर रहा है, जैसा कि आर्य समाज के तृतीय नियम में वर्णित है। इसके साथ ही 'पदार्थ' पद इस सम्पूर्ण सृष्टि के पदार्थों अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति तथा प्रकृति के विकार रूप में उत्पन्न सभी जड़ पदार्थों की ओर संकेत कर रहा है। ये सभी पदार्थ जिस वेदविद्या से जाने जाते हैं, वही सत्यविद्या है। इस प्रकार इस सृष्टि के सभी जड़ व चेतन पदार्थ तथा उनको जानने का साधन सत्यविद्या दोनों की उत्पत्ति का मूल

निमित्त कारण परमात्मा है। यहाँ कोई यह शंका करे कि 'पदार्थ' पद के पश्चात् आये 'विद्या' के साथ 'सत्य' पद क्यों नहीं? इसके उत्तर में मैं कहना चाहूँगा कि यह कोई दोष नहीं है। ऋषि अपनी बात सूत्र रूप में ही कहते हैं। अनावश्यक विस्तार देना उनका स्वभाव नहीं होता। सभी आर्ष ग्रन्थ इसी शैली के प्रतिपादक हैं। वैसे भी यदि मैं कहूँ, "कि यह काला घोड़ा और जो व्यक्ति घोड़े पर बैठा है, का निवास वह गाँव है," तब क्या यहाँ यह अर्थ नहीं निकल सकता कि वह काला घोड़ा तथा जो व्यक्ति उस काले घोड़े पर बैठा है, उस गाँव के रहने वाले हैं। अवश्य ही यहाँ यही अर्थ है। इसी प्रकार की शैली में आर्य समाज का प्रथम नियम लिखा गया है।

अब यहाँ कोई यह प्रश्न कर सकता है कि महर्षि पतंजलि ने योगसूत्रों में पदार्थ के स्वरूप के यथार्थ ज्ञान को ही विद्या कहा है, जैसे सत्य को सत्य, आत्मा को आत्मा तथा सुख को सुख आदि मानना व जानना ही विद्या कहाती है। तब 'विद्या' के लिए 'सत्य' विशेषण का प्रयोग क्यों? क्या विद्या कभी असत्य भी हो सकती है? इस विषय में मेरा मानना है कि महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में 'सत्य' का अर्थ नित्य किया है। इस कारण यहाँ 'सत्य' पद को नित्य का पर्यायवाची मानना चाहिए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि सभी प्रकार का नित्य ज्ञान और उस नित्य ज्ञान से जो पदार्थ जाने जाते हैं अथवा जाने जा सकते हैं, उन दोनों ही का आदि मूल परमात्मा है। यह नित्य ज्ञान वेद है और वेद से जानी जाने वाली सम्पूर्ण सृष्टि, इन दोनों का कर्त्ता परमात्मा है। यहाँ अनित्य विद्या का कर्त्ता परमात्मा नहीं है। इसका अर्थ यह है कि वेद में अनित्य इतिहास आदि विद्यायें नहीं है, भले ही वे विद्याएँ यथार्थ हों।

किसी राजा, रानी, ऋषि, मुनि का इतिहास, पर्वत, देश, आदि के नाम अनित्य इतिहास के भाग हैं, इनका वर्णन वेदों में नहीं हो सकता। इस कारण आर्य समाज के प्रथम नियम में महर्षि वेद व सृष्टि दोनों का कर्त्ता परमेश्वर को मानते हैं, इसे इसी संदर्भ में ग्रहण करना चाहिए न कि नाना भ्राँतियों में फंसकर अपना समय व्यर्थ करना चाहिए।

खुशहाल चन्द्र आर्य का अभिनन्दन

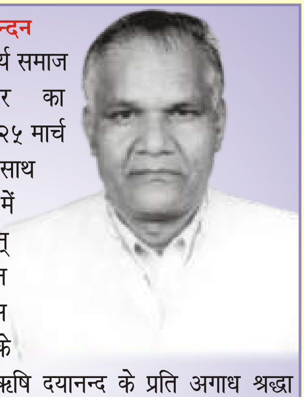

महर्षि दयानन्द गुरुकुल और आर्य समाज मालिग्राम पश्चिम, मेदनीपुर का वार्षिकोत्सव विगत २३ मार्च से २५ मार्च तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में पश्चिम बंगाल के प्रसिद्ध विद्वान् और नेतागण तथा विभिन्न ग्रामवासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज के अनन्य भक्त, सेवा पारायण, ऋषि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले वैदिक धर्म ध्वज के संवाहक, वैदिक सिद्धान्तों एवं विचारों के प्रचार व प्रसार में रत, सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि तथा श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के न्यासी का सार्वजनिक अभिनन्दन दिनांक २५ मार्च २०१८ को किया गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से श्री खुशहाल चन्द्र आर्य जी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

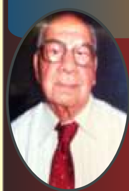

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

'सबका आदिमूल- परमेश्वर' लेख की दृष्टि में आर्यसमाज का प्रथम नियम

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित आर्य समाज का प्रथम नियम जिस पर आर्य समाज के विद्वानों ने अपनी बुद्धि से बहुत प्रकार की व्याख्याएँ की हैं। अब तक प्राप्त व्याख्याएं ऋषि एवं ऋषि परम्पराओं के अनुसार सर्वथा अज्ञानमूलक ही रही हैं। कारण यह रहा है कि ऋषियों द्वारा लिखित शास्त्रों को अधिगत एवं संगत करने का तरीका उनको आता ही नहीं है या फिर उनका बुद्धि सामर्थ्य ही नहीं है।

इसी प्रकार एक प्रयास और नया हुआ है जो कि उन सभी पूर्ववर्ती विद्वानों की भूलों को सुधारने की दृष्टि से किया गया है। लेकिन इस प्रयास में भी विद्या का दम्भ स्पष्ट अपना स्वरूप प्रदर्शित कर रहा है। परिणाम यह हुआ जो भयंकर भूलें उन विद्वानों से हुईं उनसे भी भयंकर भूल ऋषि के इस प्रथम नियम की व्याख्या में हुई है। यह हमारे मित्र आचार्य श्री अग्निव्रत नैष्ठिक वैदिक वैज्ञानिक द्वारा किया गया प्रयास है। इस विषयक कुछ और अधिक लिखने के स्थान पर आचार्य जी द्वारा की गई व्याख्या के अंशों से कुछ जानने का प्रयास अवश्य करेंगे। इससे आगे यदि श्री आचार्य जी महाराज की आज्ञा होगी तो कुछ लिखा अथवा विमर्श भी किया जा सकेगा। यदि आज्ञा नहीं हुई तो कोई आवश्यकता नहीं+अस्तु! जैसा होगा यथावसर किया जावेगा। नियम इस प्रकार है:-

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है-

यहाँ हम आचार्य जी की मान्यताओं, निष्कर्षों को यथावत देने के पश्चात् उस पर अपना विचार भी प्रस्तुत करते जायेंगे।

१. सत्य विद्या एक समस्त पद है।

विचार- सत्यविद्या एक समस्त पद है तो इसमें समास क्या है? और उसका अर्थ क्या होगा? क्योंकि आगे की संगति में इसका सहचार भाव होगा।

२. किसी को अधिकार नहीं है कि महर्षि के वाक्य को बदले।

विचार- पूर्ण रूप से सहमति है कि नितान्त रूप से किसी को यह अधिकार नहीं है कि ऋषि के वाक्य को बदले। पर आचार्य श्री आपने स्वयं अपनी इस प्रतिज्ञा को भंग किया है। अब हम व्याख्या भाग पर विचार करते हैं-

१.'सत्य' पद 'विद्या' के साथ जुड़ा हुआ है विशेषण के रूप में।

विचार- इधर तो आप सत्य विद्या को एक समस्त पद मानते हैं। और यहाँ पर सत्य विशेषण है, विद्या पद का यह आप मानते हैं। चलिए 'सत्य विद्या' में विशेष्य और विशेषण के सम्बन्ध का नाम विशिष्ट कहलाता है वह क्या है? फिर आपने 'सब' शब्द को क्यों हटा दिया? यहाँ पर आपको अधिकार है कि सब सर्वनाम को साथ लिए बिना आप अपना मनमानी अर्थ कर सकते हैं? यदि 'सब' लगा दिया जाए तो फिर आपके इस वाक्य योजना का कुछ अर्थ रह जायेगा?

२. और 'पदार्थ''विद्या' से पृथक् है।

विचार- आचार्य जी महाराज! यहाँ पर 'विद्या' पद अपने कारक के साथ है। आप 'पदार्थ' को 'विद्या' से पृथक् करके वाक्य के अस्तित्व को मिटा देने की कामना कर रहे हैं जो कि सर्वथा हेय है। यहाँ पर आपने 'जो' को छोड़कर उन्मुक्त उड़ान लेने की कोशिश की जो कि उड़ने का असफल प्रयास मात्र है। 'जो' को आपने पृथक् करके कैसे सोचा?

३. इस द्वितीय 'विद्या' पद के साथ 'सत्य' विशेषण नहीं है। परन्तु यहाँ लुप्त रूप से इसके साथ जुड़ा अवश्य है अर्थात्

यह 'विद्या' पद पूर्व में आए 'सत्य विद्या' के लिए प्रयुक्त है।
विचार- आपको अधिकार है कि आप सत्य को विशेषण मानकर उचित स्थान पर संयोजित कर दें। जैसाकि आपने सत्य को लुप्त मानकर जोड़ भी दिया है। कृपया यह सोचिए एक तरफ आप सत्य विद्या पद को एक ही पद मानते जो समस्त यानि समासयुक्त है, उसमें से आप अपनी चाह पूरी करने के लिए एक पद उठा लावेंगे तो आपके अनुसार अब वहाँ पर मात्र 'विद्या' पद बचा और यहाँ पर 'जो पदार्थ सत्य विद्या से' यह वाक्य हो गया।
दूसरी बात लुप्त कहाँ होता है? और यहाँ पर उसका लोप कैसे हुआ? यह आश्चर्यमयी घटना आपके ही वश की बात है।
क्या यहाँ पदार्थ विद्या एक समस्त पद है जिसमें आप यह असाध्वी कल्पना कर सकें कि सत्य का लोप हो गया है। जबकि आप पूर्व में पदार्थ को विद्या से पृथक् मान चुके हैं। चलो! आपमें असंभव को संभव बनाने का सामर्थ्य है तो फिर वाक्य इस प्रकार से बनेगा कि 'जो पदार्थ सत्य विद्या से' फिर यहाँ पर प्रश्न है कि प्रथम विद्या शब्द व्यर्थ हो गया।
४. अब आप अपने निष्कर्षात्मक तथ्यहीन कथ्य पर विचार कीजिए कि-
निष्कर्षः- 'सम्पूर्ण सत्य विद्या और जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं, का आदि मूल परमेश्वर है।
विचार- प्रथम तो आपके निश्चित किए मानकों के हिसाब से वाक्य इस प्रकार से होगा-
'सब विद्या और जो पदार्थ सत्य विद्या से जाने जाते हैं, का आदि मूल परमेश्वर है।'
हम विचार करें सब विद्या क्या है यह अनुत्तरित प्रश्न है। यदि सब के साथ विद्या को देखें तो 'सब विद्याएँ' या 'सब विद्याओं' होना चाहिए। लेकिन यहाँ पर एक वचन ही है। जो पदार्थ सत्य विद्या से जाने जाते हैं- यहाँ पर 'सत्यविद्या' आपके अनुसार एक समस्त पद है, आपने एक पद केवल विद्या बना दिया। लेकिन आप तो इससे भी आगे चले गए, समस्त ऋषि-भाषा का कचरा बना डाला। देखिए-
१. 'सब' के स्थान पर 'सम्पूर्ण' शब्द का स्थापन।
२. और जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं। आप भूल गए कि आपने सत्य पद को लुप्त मानकर अर्थात् 'पदार्थ और विद्या' से के बीच में 'सत्य' रखकर एक पद 'पदार्थ सत्य विद्या से' बना दिया। उससे पूर्व आप घोषणा कर चुके हैं कि पदार्थ विद्या से पृथक् है। और 'उस' शब्द को आपने कैसे जोड़ा?
३. सम्पूर्ण सत्य विद्या और जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं, का आदि मूल परमेश्वर है।
१. इस वाक्य में जाने जाते हैं के पश्चात् 'उन सबका' इसके स्थान पर केवल 'का' क्यों लिखा है। 'उन सबका' क्यों हटा दिया?
२. प्रत्येक साधारण व्यक्ति भी जानता है कि 'और' दो वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयोग होता है जैसेकिः-
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। (आर्य समाज का चतुर्थ नियम)
इस नियम में दो वाक्य हैं- जो इस प्रकार हैंः-
१. सत्य के ग्रहण करने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
२. असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
दोनों को मिलाकर एक ही क्रिया से 'और' संयोजक शब्द के साथ जोड़ दिया। तब वाक्य इस प्रकार बना कि-
सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
अगर इस प्रकार हम आपके रचित वाक्य को देखें तो उसकी हालत क्या होती है? सम्पूर्ण सत्य विद्या और जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं का आदि मूल परमेश्वर है।
दो वाक्यों को पृथक् कर इनका स्वरूप इस प्रकार होगा।
(१) सम्पूर्ण सत्य विद्या उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं का आदि मूल परमेश्वर है।
(२) जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं का आदि मूल परमेश्वर है।
अभिप्राय- १. सम्पूर्ण सत्य विद्या उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं इस वाक्य का अर्थ समझा जा सकता है। इतना वैदुष्य कहाँ से लाया जावे जो इसका अर्थ समझ सकें।
द्वितीय वाक्य में जो पदार्थ उस सत्य विद्या से जाने जाते हैं। कौन सी है वह सत्य विद्या जिसे मैं 'उस सत्य विद्या से' यह मान सकूँ।
(३) उन सबका यह शब्द हटाकर उसके स्थान 'का' से काम चलाना, यह कैसी बुद्धिमानी है? फिर आदि मूल का क्या बनेगा?
५. यहाँ 'सत्य विद्या' पद वेद की ओर संकेत कर रहा है। जैसा कि आर्य समाज के तृतीय नियम में वर्णित है।
विचार- श्रीमान् आचार्य जी! आर्य समाज के तृतीय नियम में सत्य विद्या वेद है ऐसा तो कुछ भी नहीं है। वहाँ पर तो ऋषि ने लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और इसका अर्थ है कि सब सत्य विद्याओं का अधिकरण वेद है। जैसाकि ऋषि ने स्वयं लिखा है '**सर्व विद्याधिकरणं वेदशास्त्रम्**' अर्थात् सब विद्याओं का खजाना वेदशास्त्र है। इसके अतिरिक्त दूसरा प्रमाण-

प्रश्न- वेदेषु सर्वाविद्याः सन्त्याहोस्विन्नेति।
वेदों में सब विद्या है या नहीं?
उत्तर- सर्वाः सन्ति मूलोद्देशतः। सब है। क्योंकि जितनी सत्यविद्या संसार में है वे सब वेदों से ही निकली है। (महर्षि दयानन्द) आप कह रहे हैं वेद ही सत्य विद्या है इस वाक्य में और वेद सब विद्याओं का खजाना है तथा सब विद्या वेद में हैं और वेदों से ही निकली हैं क्या इसमें कुछ भी अन्तर है ही नहीं? अब हम क्या कह सकते हैं अपने निष्कर्षात्मक अर्थ पर स्वयं ही विचार कीजिए।

६. इसके साथ ही 'पदार्थ' पद इस सम्पूर्ण सृष्टि के पदार्थों अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति के विकार रूप में उत्पन्न सभी जड़ पदार्थों की ओर संकेत कर रहा है।

विचार- यह आपका खोजपूर्ण ऐसा रहस्योद्घाटन है कि जिसकी समता अर्थात् समर्थन करने का साहस आज तक कोई ऋषि भी नहीं कर पाया। आपका वाक्य 'पदार्थ' पद इस सम्पूर्ण सृष्टि के पदार्थों अर्थात् ईश्वर, जीव व प्रकृति के विकार रूप में उत्पन्न सभी जड़ पदार्थों की ओर संकेत कर रहा है। आपके वाक्यानुसार अर्थ हुआ-
ईश्वर के विकार रूप में
जीव के विकार रूप में व
प्रकृति के विकार रूप में जड़ पदार्थों की ओर संकेत कर रहा है।
श्रीमान् आचार्य जी! सृष्टि में उत्पन्न कोई जड़ पदार्थ ईश्वर का विकार नहीं है और न ही जीव का विकार है। हाँ! प्रकृति का विकार तो है ही। क्योंकि प्रकृति परिणामिनी है। प्रलय में निर्विकाररूप से रहती है और सृष्टि में सविकार रूप से। ईश्वर सदा एकरस बना रहता है। न कभी उत्पत्ति में आता है और न प्रलय में जाता है। ईश्वर पूर्ण होने से, अनन्त होने से और सर्वदा एकरस होने से वर्तमान रहता है। जीव अल्पज्ञ होने से, शुभाशुभ कर्म करता हुआ अविद्या से जन्मादि में आता जाता है परन्तु अपनी सत्ता से उसमें विकार उत्पन्न नहीं होता। शरीर संयोग से सोपाधिक है।

७. ये सभी पदार्थ जिस वेद विद्या से जाने जाते हैं, वही सत्य विद्या है।

विचार- यह आपका निष्कर्ष स्वयं अस्तित्वविहीन हो जाता है जैसा कि पाँचवे संख्यात्मक तथ्य पर विचार किया है।

८. इस प्रकार इस सृष्टि के सभी जड़ व चेतन पदार्थ तथा उनको जानने का साधन सत्य विद्या दोनों की उत्पत्ति का मूल निमित्त कारण परमात्मा है।

विचार- अब तक आपके द्वारा किए गए अन्वेषण में यह सार कहीं भी नहीं स्पष्ट किया गया है जो इस आठवें संख्यात्मक अन्वेषण में स्पष्ट किया है कि जड़ व चेतन पदार्थ तथा उनको जानने का साधन सत्य विद्या दोनों की उत्पत्ति का मूल निमित्त कारण परमात्मा है। वहाँ पर वाक्य कुछ और ही है- वह इस प्रकार है 'सम्पूर्ण सत्य विद्या और जो पदार्थ इस सत्य विद्या से जाने जाते हैं, का आदि मूल परमेश्वर है।
अब आप किस प्रकार फंसे हैं- १. अगर आप सत्य विद्या को वेद ही मानते हैं तो तब ईश्वर मूल निमित्त है तो वेद इस प्रकार ही हुआ जैसे उत्पन्न होने से पूर्व घड़े का अभाव था जिसको प्रागभाव कहते हैं। समस्या तब और उत्पन्न हो जावेगी जब प्रागभाव ही प्रध्वंसाभाव में बदल जाता है अर्थात् जो वस्तु संयोग से पूर्व न हो फिर संयोग से उत्पन्न होती है तो उसका प्रध्वंसाभाव निश्चित होगा।
अब आप यह सिद्ध कीजिए- वेद उत्पन्न होने से पूर्व नहीं रहते और उत्पन्न होने के पश्चात् नष्ट हो जावेंगे। अरे महाराज! ऋषि तो यह लिखते हैं-
वीजाङ्कुर न्याय से ईश्वर के ज्ञान में वेद नित्य वर्तमान रहते हैं सृष्टि के आदि में ईश्वर से वेदों की प्रसिद्धि होती है और प्रलय में जगत् के नहीं रहने से उनकी अप्रसिद्धि होती है इस कारण से वेद नित्यस्वरूप ही बने रहते हैं। (महर्षि दयानन्द)
दूसरी बात इस नियम में आदि मूल का अर्थ मूल निमित्त कारण नहीं है। यह आपका भ्रममात्र ही है।

९-१० पदार्थ पद के पश्चात् आए विद्या के साथ सत्य नहीं है- उत्तर यह कोई दोष नहीं। सूत्रशैली है। आर्ष ग्रन्थ इसी शैली के प्रतिपादक है-
उदाहरण- यह काला घोड़ा और जो व्यक्ति घोड़े पर बैठा है, का निवास यह गाँव है।

विचार- यह कौनसा सूत्र है कि 'कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा।' यह कौन सा सूत्र है कि अपनी अज्ञानमूलक अथवा भ्रान्तियुक्त मान्यता की सिद्धि के लिए कहीं से शब्द उठाकर कहीं रख दें। उदाहरण इतना गलत है कि जिसका महर्षि के वाक्य से कोई संगति लगती ही नहीं है। अनार्ष उदाहरण आर्ष की सिद्धि के लिए कैसे दिया जा सकता है। आर्ष और अनार्ष का भेद दृष्टव्य है-
यः कश्चिदनूचानो, विद्यापारगः पुरुषोऽभ्यूहति ......
तदेवार्षमृषिप्रोक्तं वेदव्याख्यानं भवतीति मन्तव्यम्। किं च यदल्पविद्येनाल्पबुद्धिना, पक्षपातिना मनुष्येण चाभ्यूहते तदनार्षमनृतंभवति। नैतत्केनाप्यादर्तव्यमिति। कुतः? तस्यानर्थयुक्तत्वात्। तदादरेण मनुष्याणामप्यनर्थायत्तेश्चेति।
आर्ष ऋषि प्रोक्त होता है और अनार्ष मनुष्य प्रोक्त होता जो कि आदर के योग्य नहीं, यह सिद्ध हुआ। सम्पूर्ण कथन में

आपकी प्रथम मान्यता जो पक्षपातपूर्ण है- वह बनाई उसको सिद्ध करने के लिए जो कहा सो कहा! अब देखिए- यह काला घोड़ा- सब सत्य विद्या और जो व्यक्ति घोड़े पर बैठा है- और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, का निवास यह गाँव है- उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। क्या संगति है। लगता है मेरे आचार्य जी, दृष्टान्त की परिभाषा भी भूल गए अपनी मान्यता की सिद्धि के प्रयोजन की हठ में। दृष्टान्त परिभाषा -

लौकिक परीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे बुद्धि साम्यं स दृष्टान्तः।
यस्मिन् पदार्थे लौकिकानां= शास्त्रीयज्ञानरहितानां
परीक्षकाणां= शास्त्रीयज्ञानवतां च बुद्धि साम्यं=
साध्यसाधनयोः समानाधिकरण्यविषयक बुद्धेः साम्यं
भवति स दृष्टान्तः।

अर्थात् जिस पदार्थ में लौकिक अर्थात् शास्त्रीय ज्ञान रहित तथा शास्त्रीय ज्ञान युक्त दोनों के ज्ञान की समता हो, उसे दृष्टान्त कहते हैं सो इस उदाहरण में ऐसी कोई विशेषता है नहीं।

काले घोड़े की समता- सब सत्य विद्या से नहीं है और जो व्यक्ति घोड़े पर बैठा है, उसकी संगति 'और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं', इससे नहीं है। तथा 'का निवास यह गाँव है'- 'उन सबका आदि मूल परमेश्वर है' से भी नहीं है। अपनी अज्ञानमूलक मान्यता की सिद्धि में साध्यनिर्देश प्रतिज्ञा के विरुद्ध उदाहरण अमान्य ही है।

११. महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में सत् का अर्थ नित्य किया है। इस कारण यहाँ सत्य पद को नित्य का पर्यायवाची मानना चाहिए।

विचार- पूज्य आचार्य जी! सत् और सत्य दोनों एकार्थवाची मान्य कर स्वमन्तव्य में सिद्धि का हेतु बना दिया। सत् का अर्थ तो नित्य है ही। सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर का प्रकरण है इसलिए मात्र ईश्वर में घटा दिया। नहीं तो सत्य ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों को ही कहते हैं। जो केवल कारण हों अर्थात् जिनका कोई कारण न हो वे सत् हैं और नित्य हैं। सूत्र देखिए- **सदकारण वन्नित्यम्** (वै.दर्शन) सत् का आर्ष 'अस्तीति सत्' अर्थात् जो सदा वर्तमान हो वह सत् है। लेकिन 'सत्य' का अर्थ यह नहीं है- अपितु **'सन्तीति सन्तः तेषु सत्सुसाधु सत्यम्'** जो पदार्थ हो उनको सत् कहते हैं, उनमें साधु होने से, सत्य होने से, सत्य कहाता है।

वर्तमान में प्रकरण में आपका मन्तव्य पूर्ण होता हुआ नजर नहीं आता। अगर आप सत्य कहते हैं- तो 'सत्' अव्याकृत प्रकृति से उत्पन्न यह संसार 'सत्य' हुआ। ईश्वर तो प्रकृति सत् में भी है इसलिए भी सत्य है और उत्पन्न हुआ भी विद्यमान है। लेकिन सत् को सत्य का पर्यायवाची मानकर नित्य वेद ज्ञान सिद्ध करना आपके बूते की बात नहीं है जैसाकि आपने अग्रिम संख्यात्मक प्रवाह में सिद्ध करने का प्रयत्न किया है।

१२. इसका तात्पर्य यह हुआ कि सभी प्रकार नित्य ज्ञान और उस नित्य ज्ञान से जो पदार्थ जाने जाते हैं अथवा जाने जा सकते हैं उन दोनों का ही आदि मूल परमात्मा है।

विचार-

१. आप कहते हैं ऋषि का वाक्य नहीं बदलना चाहिए। आपने कई स्थानों पर बदला है। यहाँ पर भी बदल डाला।

२. 'उन सबका' की जगह 'उन दोनों ही का' यह पाठ परिवर्तन किया।

३. 'आदि मूल परमेश्वर है'- की जगह 'आदि मूल परमात्मा है।'

४. 'सब सत्य विद्या' के स्थान पर 'सभी प्रकार का नित्य ज्ञान' क्यों लिखा?

५. 'जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं' के स्थान पर 'उस नित्य ज्ञान से जो पदार्थ जाने जाते हैं अथवा जाने जा सकते हैं' पाठ कर दिया। यह शोभनीय नहीं है।

क्रमशः विचार करते हैं-

२. 'उन सबका' अर्थ 'उन दोनों ही का' है। संसार का साधारण से साधारण अल्पमति भी दुर्भाग्य से नहीं मिलेगा जो 'उन सबका' उसका अर्थ 'उन दोनों ही का' करे या समझे।

३. 'आदि मूल परमेश्वर' की जगह 'आदि मूल परमात्मा' है। यहाँ पर परमेश्वर के स्थान पर परमात्मा बदलकर रख दिया। क्या जो अभिप्राय 'परमेश्वर से' निकलता है वह 'परमात्मा से' शब्द से भी निकलेगा। प्रकरणवश यहाँ परमेश्वर ही अभिप्रेत अर्थ को प्रकट करना उपयुक्त है, परमात्मा नहीं। चाहे एक ही सत्ता के दोनों नाम ही क्यों न हो। महाराज! अब देखिए- दोनों शब्दों के अर्थों का अन्तर

प्रथम- परमात्मा का अर्थ-

'परश्चासावात्मा च, य आत्मभ्यो जीवेभ्यः सूक्ष्मेभ्यः परोऽतिसूक्ष्मः स परमात्मा।'

जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव और प्रकृति तथा आकाश से अति सूक्ष्म और सब जीवों का अन्तर्यामी आत्मा है वह ईश्वर परमात्मा है।

यह अर्थ ईश्वर की सूक्ष्मों में अतीव सूक्ष्मता तथा सूक्ष्म जीव की अन्तर्यामिता का द्योतक है। तथा परमेश्वर

यः ईश्वरेषु समर्थेषु परमः श्रेष्ठः स परमेश्वरः।

सामर्थ्य वाले का नाम ईश्वर है। और जो ईश्वरों का अर्थात् समर्थों में समर्थ जिसके तुल्य कोई भी न हो, उसका नाम परमेश्वर है। अतः आदि मूल परमेश्वर ही हो सकता। परमात्मा शब्द आपने व्यर्थ प्रयोग किया है।

विशेषः- यह गहन तथ्य इस समय स्पष्ट नहीं करूँगा कि आदि मूल परमेश्वर क्यों संगत है। परमात्मा क्यों नहीं? यहाँ यही समीचीन है। मित्र भाव से जब आप कहेंगे तब स्पष्ट करूँगा।

५. आचार्य जी! 'सब सत्य विद्या' के स्थान पर नित्य ज्ञान भी सर्वथा असंगत है तथा आगे यह पाठ कि उस नित्य ज्ञान से जो पदार्थ जाने जाते हैं अथवा जाने जा सकते भ्रमात्मक संशयात्मक अपरिपक्व होने से सर्वथा भ्रान्त है।

१३. यह नित्य ज्ञान वेद है और वेद से जानी जाने वाली सम्पूर्ण सृष्टि इन दोनों का कर्ता परमात्मा है। यहाँ अनित्य विद्या कर्ता परमात्मा नहीं है।

विचार- मैं बहुत आश्चर्य में पड़ जाता हूँ जब आपकी इस प्रकार आधारहीन सोच देखता हूँ। यहाँ पर आप कहते हैं कि नित्य ज्ञान वेद है उसका कर्ता परमात्मा है। आचार्य जी। मैं पहले ही लिख चुका हूँ कि वेद उत्पन्न नहीं होते हैं। इधर आप वेद को नित्य मान रहे हैं और इधर आप वेद का कर्ता ईश्वर मान रहे हैं। या तो वेद को नित्य मत मानो या उत्पन्न होना मत स्वीकार करो। जो वस्तु नित्य होती है वह स्वभाव सिद्ध और अनादि होती है। दूसरी बात वेद कोई ऐसी चीज नहीं है जो किसी अन्यकारण-यानि सामर्थ्य से ईश्वर उत्पन्न करता है जैसे कि मिट्टी से घड़ा कुम्हार बनाता है या प्रकृति से ईश्वर संसार बनाता है। यहाँ पर मिट्टी अथवा प्रकृति कुम्हार अथवा ईश्वर के घड़ा वा संसार उत्पन्न करने में सामर्थ्य है। इस प्रकार वेद नहीं है अपितु यह तो ईश्वर के ज्ञान रूप सामर्थ्य हैं। जिससे यदि ईश्वर नित्य है तो वेद ज्ञान सामर्थ्य भी नित्य हैं। वेद उस ईश्वर के विद्यास्वरूप होने से नित्य है। ईश्वर की विद्या कभी अनित्य नहीं हो सकती उसके नित्य स्वरूप होने के कारण।

फिर आप कहते हैं कि अनित्य विद्या का कर्ता ईश्वर नहीं है। मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि संसार अनित्य है वा नित्य है। तो आप कहेंगे कि संसार अनित्य है। इसका कर्ता ईश्वर है कि नहीं। तो फिर आप यह क्यों कह रहे हैं कि अनित्य विद्या का कर्ता ईश्वर नहीं है। महाराज! इसलिए आपको जब यह अर्थ नहीं सूझा तो वेद अनित्य इतिहास आदि विद्याओं की बात कहकर अप्रसंगोपात अकथ्य को लाकर उपस्थित कर दिया। 'उपस्थितं परित्यज्य अनुपस्थितं याचते' वाली बात कह डाली। यह सर्वथा अनर्थक है। आप कहते हैं कि इसी संदर्भ में जैसाकि आपने कहा है ग्रहण करना चाहिए नाना भ्रान्तियों में फंसकर अपना समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए। भ्रान्ति तो सबसे अधिक आपको ही है। निर्भ्रान्त होकर भ्रान्तिहीन होने का कष्ट करें।

मेरा निवेदन है कि इस विचार विमर्श को आप अन्यथा नहीं ग्रहण करें। कृपया विद्या को विवाद का स्थान न मानकर संवाद के लिए ही स्वीकार करने की कृपा करें। एतदर्थ जब आप कहेंगे तो मैं आमने सामने बैठकर ऋषि को यथातथ्य कथन को प्रस्तुत करने के लिए समुद्यत रहूँगा। मेरा लेशमात्र भी उद्देश्य प्रतिष्ठा हानि करना नहीं है अपितु यथाततथ्यतः प्रकट करना उद्देश्य विहित है। इस शुद्ध भावना के साथ लेख को समाप्त करता हूँ कि ऋषियों के लेखों से संशोध्य भावना न रखकर ज्यों का त्यों स्वीकार कर शास्त्रों से पुष्ट किया जावे। इसी में हमारा गौरव है। इस अभिप्राय का एक श्लोक भी देखिए-

विद्यानुरागशुभवृत्ति विशुद्धचित्ताः,
उत्कृष्ट हर्षमपि जग्मुरिवाम्बरे वा।
उद्यन्तमिन्दुमवलोक्य चकोर वृन्दं,
विद्वान्स एवमृषिवर्य्यमतं प्रशस्तम्॥

अर्थात्- विद्यानुरागी विशुद्ध हृदय विद्वान् ऋषिवर्य के प्रशस्त सिद्धान्त देखकर ऐसे ही परम प्रसन्न होते हैं जैसे चकोर वृन्द अम्बर में उदय होते हुए पूर्ण चन्द्र को देखकर प्रसन्न होते हैं। इति।

- आचार्य वेद प्रकाश 'श्रोत्रिय'
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट
प्रथम तल, अलकनन्दा, नई दिल्ली- १९

२१वाँ
सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
दिनांक ६ से ८ अक्टूबर २०१८

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

जो करता है नेक काम और,
संघर्ष से नहीं घबराता है।
मंजलि उसको गले लगाती,
हर क्षण वह सुख पाता है।।
सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

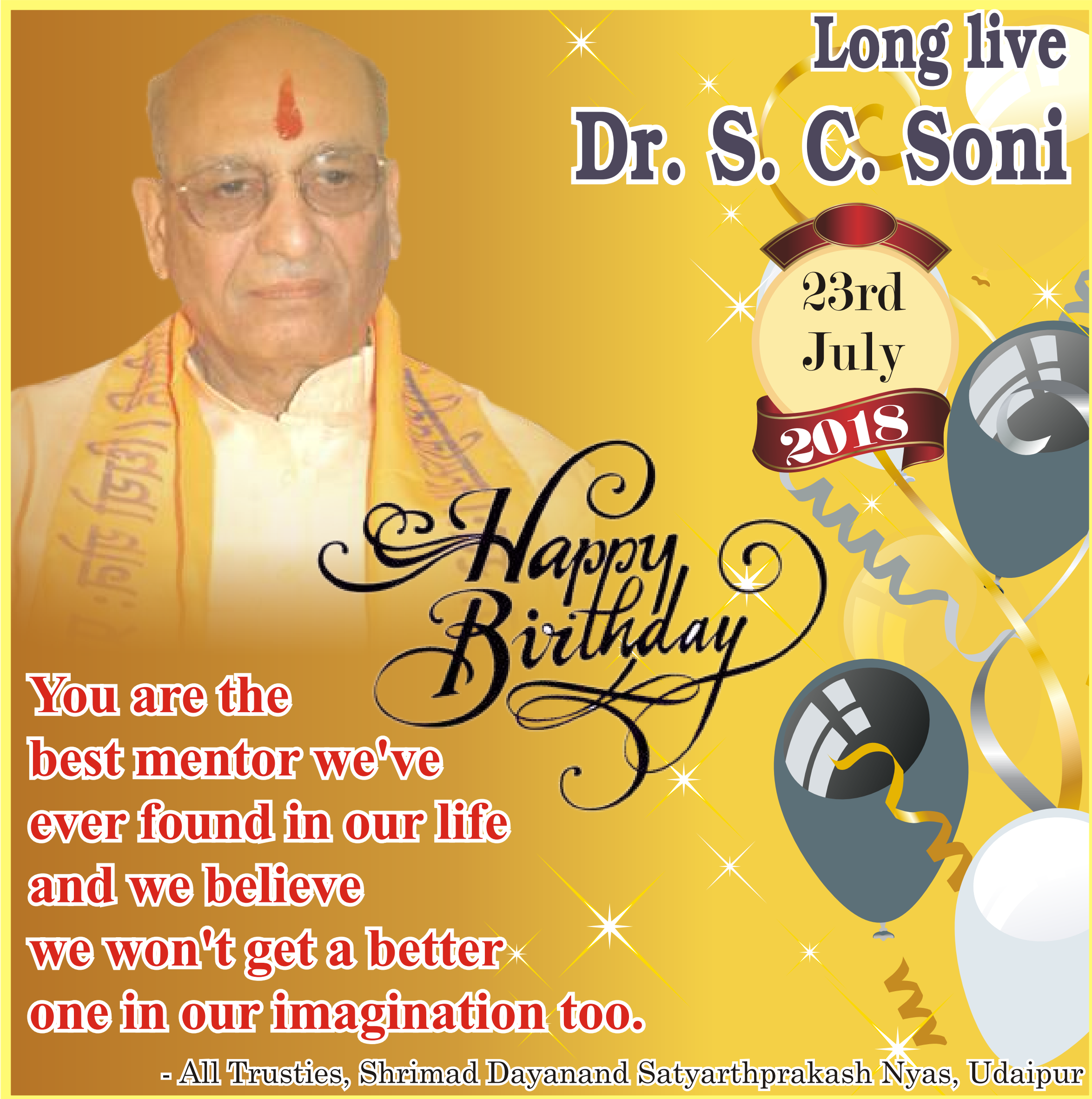

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली परिसर में कन्या चरित्र निर्माण योग शिविर का शुभारम्भ हुआ। इस मौके पर ध्वजारोहण और उद्घाटन समाजसेवी उद्योगपति जगमोहन मित्तल ने किया, अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। शिविर में स्वामी आर्यवेश ने कहा शिक्षित संस्कारित नारी ही मानव का निर्माण कर सकती है। माँ-बच्चे की पहली गुरु होती है। यदि गुरु ही संस्कारित नहीं होंगे तो बच्चों में संस्कार कैसे पैदा होंगे? इसलिए सरकार को नारी को शिक्षा संस्कार देने पर ताकत लगानी चाहिए। उन्होंने पाँच सौ बहनों को जीवन में संस्कार, चरित्र, ईमानदारी, नैतिकता, राष्ट्रभक्ति, ईश्वरभक्ति को जीवन में अपनाने का संकल्प दिलाया। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम आर्या के सान्निध्य में चलने वाले शिविर में योगासन, प्राणायाम के अतिरिक्त स्वयं सुरक्षा के लिए जूड़ो-कराटे, कमांडो लाठी का प्रशिक्षण अनुभवी प्रशिक्षिकाओं द्वारा दिया गया। इस अवसर पर अतिथियों को स्मृति चिह्न व सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए गए।

वैटिकन की सरकारें लाने को षड्यंत्र रच रहा है चर्च- विहिप

नई दिल्ली। ६ जून २०१८। चर्च द्वारा वर्तमान सरकारों पर बार-बार हमलों पर अपनी चुप्पी तोड़ विश्व हिन्दू परिषद् ने प्रतिक्रिया देते हुए आज कहा है कि भारत का चर्च, एक बड़े षड्यंत्र के तहत, केंद्र व राज्यों में ऐसी सरकारें बनाने में जुट गया है जो कि वेटिकन की कठपुतली बनकर उसका स्वार्थ सिद्ध कर सकें। विहिप के संयुक्त महासचिव डॉ. सुरेन्द्र जैन ने आज कहा कि दिल्ली के आर्कबिशप के बाद अब गोवा के आर्कबिशप को भी संविधान खतरे में दिखाई दे रहा है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि वैटिकन के इशारे पर भारत का चर्च वर्तमान सरकारों के विरोध में एक वातावरण बनाने का षड्यंत्र कर रहा है। केवल भाजपा सरकार के आने पर ही इनको ऐसा क्यों दिखाई देता है, यह प्रश्न देश पूछना चाहता है। मोदीजी की सरकार के आते ही चर्च पर हमलों के झूठे प्रचार किए गये और सारे झूठ पकड़े जाने पर भी इन्होंने माफी माँगने की सभ्यता तक नहीं दिखाई।

डॉ. जैन ने कहा कि वैटिकन सम्पूर्ण विश्व में केवल हिन्दू समाज को ही नहीं अपितु, भारत को बदनाम करता है और भारत का चर्च उनकी कठपुतली बनकर अपने ही देश को बदनाम करने का अक्षम्य अपराध करता है। आपात-काल लगाने, कश्मीरी हिन्दुओं के नरसंहार, १९८४ में सिक्खों के कत्लेआम, चकमा बौद्धों पर चर्च के क्रूर जुल्मों से इनको कभी संविधान खतरे में नहीं दिखाई दिया। यह इनका दृष्टिदोष नहीं, वैटिकन के इशारे पर नाचने वाली सरकार को लाने का एक राजनीतिक षड्यंत्र है। अवार्ड वापसी माफिया की तरह ये भी एक चुनी हुई सरकार को अस्थिर करने की सुपारी ले कर काम कर रहे हैं।

विहिप के संयुक्त महासचिव ने आज यह भी कहा अब उन्हें आत्मविश्लेषण कर अपने पापों के लिए माफी माँगनी चाहिए और वैटिकन से मुक्त होकर भारत के संविधान के अनुसार चलना चाहिए।

- विनोद बंसल, विहिप

मशहूर गजल गायक पंकज उधास को डाक निदेशक के. के यादव ने माई स्टैम्प भेंट कर किया सम्मानित

'चिट्ठी आई है' गीत से प्रसिद्धि पाने वाले मशहूर गजल गायक पंकज उधास के जोधपुर आगमन पर उन्हें डाक विभाग की तरफ से सम्मानित किया गया। राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र, जोधपुर के निदेशक डाक सेवाएँ एवं चर्चित साहित्यकार व ब्लॉगर श्री कृष्ण कुमार यादव ने उन्हें 'माई स्टैम्प' भेंट कर सम्मानित किया। १२ डाक टिकटों के इस माई स्टैम्प पर हवामहल के साथ पंकज उधास की तस्वीर लगाई गई है। जिस चिट्ठी पर गाये गीत ने पंकज उधास को एक पहचान दी, उसी चिट्ठी वाले डाक विभाग द्वारा अपने ऊपर पर्सनलाइज्ड डाक टिकट पाकर पंकज उधास काफी हर्षित हुए और डाक विभाग का आभार व्यक्त किया।

- सुदर्शन सामरिया, संयोजक- शब्द-साहित्य, जोधपुर

राष्ट्रीय ख्याति के इक्कीसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित

दिव्य पुरस्कारों हेतु लेखकों एवं कवियों से - कहानी, उपन्यास , कविता, गजल, नवगीत साहित्य व्यंग्य, समालोचना एवं बाल साहित्य विषयों पर मौलिक कृतियां आमंत्रित की जाती हैं ।

प्रत्येक विधा में इक्कीस सौ रुपये राशि के अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे ।

गुणवत्ता के क्रम में द्वितीय स्थान पर आने वाली पुस्तकों को दिव्य प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जायेंगे। प्रत्येक प्रविष्टि के साथ रुपये २००/- (दो सौ) प्रवेश शुल्क भेजना होगा। हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की मुद्रण अवधि १ जनवरी २०१६ से ३१ दिसम्बर २०१८ के मध्य होना चाहिए। अन्य जानकारी हेतु मोबाइल नंबर ०९९७७७८२७७७ पर सम्पर्क किया जा सकता है । पता है - श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, १४५-ए, सांईनाथ नगर, सी सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-४६२०४२ (म.प्र) पुस्तकें भेजने की अंतिम तिथि है -३० दिसम्बर २०१८

अंधविश्वास, पाखण्ड फैलाने वाले लोगों पर आर्य समाज ने की सख्त कार्यवाही की मांग

कोटा, ४ जून। जिले के प्रमुख सरकारी अस्पतालों में आत्मा ले जाने के नाम पर होने वाले टोने-टोटके एवं तंत्र-मंत्र को रोकने तथा ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने की मांग को लेकर आर्य समाज ने जिला कलेक्टर महोदय कोटा को ज्ञापन सौंपा। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता चैयरमेन कृष्णा ब्लड बैंक, प्रेमनाथ कौशल आर्य समाज भीमगंजमण्डी, आर्य समाज रामपुरा के उपमंत्री प्रभुसिंह कुशवाह, आर्य समाज तलवण्डी से वैदमित्र वैदिक ने जिला कलेक्टर कोटा शहर से मिलकर ऐसे अंधविश्वास, पाखण्ड एवं तंत्र-मंत्र को बढावा देने वाले तांत्रिकों, भोपों तथा इस प्रथा में शामिल लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही करने की मांग की।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर गौरव गोयल ने आश्वस्त किया कि जो भी हो प्रशासन उसके विरुद्ध उचित कार्यवाही करेगा। आप लोग भी आर्य समाज के माध्यम से अंधविश्वास के विरुद्ध लोगों को जागरूक करें।

- अर्जुनदेव चड्ढा, जिला प्रधान, आर्य समाज जिला सभा, कोटा

हलचल

दिल्ली की सड़कों के रास्ते में जगह-जगह मोदी सरकार की मुस्लिम प्रचार सामग्री के बोर्ड लगे हुये हैं। आरटीओ के पास से लेकर दिल्ली के हर जगह ऐसी सूचना के बोर्ड लगे हुये हैं। इन बोर्डों में दिखाया गया है कि मुस्लिम आबादी की हैसियत बढ़ाने के लिए, मुसलमान युवकों को रोजगार देने के लिए मोदी सरकार कितना कटिबद्ध है, मुस्लिम कामगारों को ब्याज मुक्त कर्ज दिया जा रहा है, आईएएस की तैयारी करने वाले मुस्लिम छात्रों को एक-एक लाख रुपये दिये जा रहे हैं, वो भी अनुदान स्वरूप।

इस विज्ञापन से प्रेरित होकर कुछ हिन्दू स्कूल-कॉलेजों के हिन्दू लड़के-लड़कियाँ अपना धर्मपरिवर्तन कर रहे हैं। उनसे पूछने पर उनका तर्क था कि हमें धर्मपरिवर्तन कर मुस्लिम या अल्पसंख्यक बनने से व्यापार, कारोबार के लिए मुफ्त में बिना ब्याज के लोन मिल जाएगा अथवा आईएएस की पढ़ाई करते हैं तो १ लाख रुपए का अनुदान मोदी सरकार द्वारा मुफ्त मिलेगा। हिन्दू बने रहने से तो हमें बस सरकार की गालियाँ, पुलिस की लाठियाँ व नौकरियों के लिए धक्के खाने के सिवाए कुछ नहीं मिलना है। समस्त हिन्दू संगठनों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

मोदी सरकार से अनुरोध है कि वह तुरन्त प्रभाव से इन भ्रामक व हिन्दू विरोधी कार्यों को बन्द करावे। - ठाकुर विक्रम सिंह (रा. अ.), राष्ट्र निर्माण पार्टी

यज्ञशाला का कार्य पूर्णता की ओर

गोकुलजी की प्याऊ स्थित आर्य समाज मन्दिर, महर्षि पाणिनिनगर, पूंजला, जोधपुर में राम-कृष्ण की पवित्र वैदिक संस्कृति की प्रतीक यज्ञशाला का कार्य प्रगति पर चल रहा है। प्रधान कैलाश चन्द्र आर्य ने बताया कि यह कार्य आर्य किशनलाल गहलोत मंत्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास के देखरेख मे चल रहा है। इस पुनीत कार्य के लिये भामाशाहों का सहयोग व मार्गदर्शन मिल रहा है तथा इस वर्ष गणमान्यजनों व विद्वानों की उपस्थिति में भव्य लोकार्पण का कार्यक्रम आयोजित होगा।

मेधावी छात्रा कु. तनेशा शर्मा (जांगिड़) का नाम योग्यता लिस्ट में

मेधावी कुमारी तनेशा शर्मा (जांगिड़), पुत्री श्रीमती तृप्तिदेवी एवं देवेन्द्र कुमार, पौत्री श्रीमती विमलादेवी एवं शंकरलाल शर्मा (जांगिड़) निवासी ६७, राधा गोविन्द कॉलोनी, ढहर के बालाजी, जयपुर ने राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में ९६ प्रतिशत अंक प्राप्त कर के अपने वैदिक परिवार, समाज, विद्यालय रमन अकादमी सी. सै. स्कूल (रा. गौ. को) का नाम आलोकित किया है। दादा जी ने ११००/- रुपये एंव दादी जी ने पाजेब पहनाकर सम्मानित किया।

आर्य समाज कृष्णपोल में मेधावी पुत्री को साप्ताहिक यज्ञ के पश्चात् प्रधान जी एवं मंत्री जी ने सम्मानित करके आशीर्वाद प्रदान किया कि वैदिक संस्कृति में पुष्पित होते हुए शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनी रहे।

- शंकर लाल शर्मा (जांगिड़), वरिष्ठ उप प्रधान आर्य समाज, कृष्णपोल बाजार जयपुर

विशाल युवा चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर का आयोजन

दिनांक ८ से १५ जून २०१८ तक आर्यवीर दल, भारत स्वाभिमान व युवा भारत के संयुक्त तत्वावधान में चितौड़गढ़ के गाँधी नगर स्थित महेश वाटिका में १८ से ३५ वर्ष तक के ५०० युवाओं का विशाल चरित्र निर्माण एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर संयोजक व भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ. एम.एल. धाकड़ के अनुसार ७ दिवसीय पूर्ण आवासीय शिविर में युवाओं में आत्मरक्षा, स्वास्थ्य रक्षा, आध्यात्मिक उन्नति व राष्ट्र चेतना जागृत करने के उद्देश्य से कार्यक्रमों को निर्मित किया गया। शिविर व्यवस्थापक व निम्बाहेड़ा आर्य समाज के प्रधान विक्रम आंजना के अनुसार शिविर में पूरे राजस्थान सहित, मध्यप्रदेश आदि से शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के सफल आयोजन के लिए पतंजलि हरिद्वार व नगर की कई नागरिक संस्थाओं से सहयोग प्राप्त हुआ। युवाओं को प्रशिक्षण देने का कार्य राजस्थान आर्यवीर दल की ओर से किया गया। शिविर के प्रचार हेतु चित्तौड़गढ़ व प्रतापगढ़ से आचार्य कर्मवीर मेधार्थी व देवेन्द्र आर्य के नैतृत्व में शिवलाल आंजना, राधेश्याम धाकड़, आदि कार्यकर्त्ताओं ने अथक परिश्रम किया।

शोक समाचार

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ है कि न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य के ताऊ जी का देहावसान दिनांक २७ मई २०१८ को हो गया। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार अपनी संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान व परिवारीजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०५/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०५/१८ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री गोवर्धन लाल झंवर; सिहोर (म.प्र.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; आर्य समाज शाहपुरा (भीलवाड़ा), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री अनन्त लाल उज्जैनिया; भोपाल (म. प्र.), श्री यज्ञसेन चौहान; बिजयनगर (अजमेर), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्रीमती किरण आर्या; कोटा (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), ज्योति कुमारी; महेन्द्रगढ़ (हरियाणा), श्री प्रधानजी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ. प्र.), श्री बाबूलाल आर्य; मन्दसौर (म.प्र.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म. प्र.), श्री बीरेन्द्र कर; भुवनेश्वर (उड़िसा), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ १९ पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

खर्राटें का उपचार जरूरी

खर्राटों का इलाज समय पर न किया जाए तो यह स्लीप एप्निया की वजह बन सकता है। स्लीप एप्निया के दौरान रक्त के आक्सीजन स्तर में अचानक कमी आना, ब्लड प्रेशर बढ़ना और कार्डियो-वैस्क्युलर सिस्टम पर दबाव बढ़ना सरीखी समस्याएं पैदा हो जाती हैं।

खर्राटा क्या है

खर्राटा नींद से संबंधित एक समस्या है, खर्राटों की आवाज नाक या मुंह, किसी से भी आ सकती है। यह आवाज सोने के बाद किसी भी समय शुरू और बंद हो सकती हैं। खर्राटे सांस अंदर लेते समय आते हैं। अधिकांश मामलों में लोगों को खुद पता नहीं होता कि वे खर्राटें मारते हैं।

खर्राटा लेने के कारण

खर्राटा मारने की कई वजह हो सकती हैं जिनमें नीचे दिए कुछ कारण प्रमुख हैं-

१- नाक के वायुमार्ग में रुकावट- नाक में विकृति होना जैसे सैप्टम (नाक के रास्ते को दो भागों में बांटने वाली दीवार) का टेढ़ापन या नाक के अंदर निकले छोटे-छोटे कणों के कारण भी वायुमार्ग में रुकावटें आ सकती हैं। इसके अलावा साइनस में संक्रमण के दौरान भी खर्राटे आते हैं।

२- मांसपेशियों की कमजोरी- गले और जीभ की मांसपेशियां जब बहुत शांत और शिथिल हो जाएं, तो इनकी मांसपेशियां रास्ते में लटकने लग जाती हैं और रास्ता रुक जाता है।

३- सोने की मुद्रा -कई बार लोग पीठ के बल सोते हैं, जिससे जीभ पीछे की तरफ हो जाती है। तालू के पीछे यूव्यल (अलिजिह्वा-तालू के पीछे थोड़ा-सा लटका हुआ मांस) पर जाकर लग जाती है, जिससे सांस लेने और छोड़ने में रुकावट आने लग जाती है। इससे सांस के साथ आवाज और वाइब्रेशन होने लगता है।

४- पैलेट या यूव्यूला (uvula) का आकार बढ़ना और नरम होना -हमारे गले के बीच में लटक रहे ऊतक को, यूव्यूला टीश्यू कहते हैं। यूव्यूला या तलुए का आकार ज्यादा बढ़ने से नाक से गले में खुलने वाला रास्ता बंद हो सकता है। हवा के संपर्क में आकर यूव्यूला में थर्थराहट उत्पन्न होती हैं जिससे खर्राटे की समस्या उत्पन हो जाती है।

५- शराब, धूम्रपान, और दवाएं- शराब का सेवन, धूम्रपान, और कुछ दवाएं जैसे कि- lorazepam (Ativan) और diazepam (Valium) आदि, मांसपेशियों को बढ़ा सकते हैं जिससे खर्राटे की समस्या को बढ़ावा मिलता है।

Health Nuskhe.com

२१वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक ६ से ८ अक्टूबर २०१८, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर में
अनेक मान्य संन्यासीवृन्द, आर्यनेता, आर्यविद्वान् व विदुषियाँ, आर्य श्रेष्ठिगण पधारेंगे व हमें प्रेरणा प्रदान करेंगे।
सशक्त मंच सदैव से सत्यार्थ प्रकाश महोत्सवों की पहचान रही है।
आपसे निवेदन है अधिक से अधिक संख्या में इस मनोरम विश्वप्रसिद्ध नगरी में पधारें और महर्षिवर देव दयानन्द की कर्मस्थली पर आर्यजगत् के पूज्य विद्वानों के सान्निध्य में अपने अन्दर नूतन ऊर्जा का संचार करें।
कृपया अपना अर्थ सहयोग श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के नाम चेक या डिमाण्ड ड्राफ्ट से भेजें।
न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा ८०जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

सकारात्मक सोच का चमत्कार

कथा सरित

वे दोनों पति-पत्नी थे। एक दूसरे से बहुत प्यार करते थे। हालांकि उनकी शादी हुए २५ साल बीत चुके थे, लेकिन उनके बीच में प्रेम का दरिया अब भी प्रवाहमान था। एक बार पति बीमार हो गया। काफी दिनों तक उसका इलाज चला। किसी तरह से उसकी जान बची। लेकिन इस बीमारी ने उसको बेहद कमजोर बना दिया। उसका मन निराशा से भर उठा और वह हमेशा दुःखी रहने लगा।

पत्नी ने सोचा कि पति को दुःख के इस भंवर से बाहर निकालने के लिये कहीं बाहर जाना चाहिए। पति को समुद्र का किनारा बहुत पसंद था। इसलिए वह एक सप्ताह का प्लान बनाकर पति के साथ एक खूबसूरत बीच पर जा पहुँची। लेकिन वहां पहुंच कर भी पति की मानसिक दशा न बदली। वह हर समय गुमसुम सा बैठा रहता और न जाने क्या-क्या सोचता रहता। यह देखकर एक दिन उसकी पत्नी ने इसे विषय पर बात करने की ठानी। उसने अपने पति की आंखों में आंखें डालते हुए पूछा, 'क्या बात है, तुम अपनी पसंदीदा जगह पर आकर भी उदास हो?'

पति ने एक लम्बी सी उबासी ली और धीरे से बोला, 'बात ही उदासी वाली है। मेरी बीमारी ने मुझे कितना कमजोर कर दिया है, मेरा आपरेशन हुआ, जिसमें एक लाख रुपये खर्च हो गये। मेरा गाल ब्लाडर निकाल दिया गया। इस बीमारी की वजह से मेरी नौकरी चली गयी। और तो और इसी साल हमारे बेटे का एक्सीडेंट हो गया, जिसमें उसके दाएं पैर की हड्डी टूट गयी और इसी साल मेरे पिता का देहांत भी हो गया। एक साथ इतने सारे पहाड़ मुझ पर टूट पड़े। अब तुम्हीं बताओ, इतने सारे दुःखों को झेलने के बाद मैं कैसे मुस्करा सकता हूं?'

पत्नी ने एक गहरी सी सांस ली और बोली, 'तुम्हें उस गाल ब्लाडर की पथरी के कारण कितना दर्द होता था। ऑपरेशन की वजह से तुम्हें उस जानलेवा दर्द से मुक्ति मिल गयी।'

पति ने आश्चर्यपूर्वक पत्नी की ओर देखा। उसका बोलना अब भी जारी था- 'इन समुद्र की बलखाती लहरों की ओर देखो , इन्हें देखकर तुम दीवाने से हो जाते थे। शायद यही कारण है कि तुम कई सालों से मुझसे कहते रहते थे कि अब बहुत कर ली नौकरी, अब तो सोचता हूं कि नौकरी से रिटायरमेंट ले लूं और किसी बीच के पास ऐश के साथ जीवन जिया जाय।' कहते हुए पत्नी ने पति की ओर सवालिया निगाहों से घूरा, 'क्या मैं गलत....?'

पति अवश सा हो गया। उसे कुछ सूझा ही नहीं कि अपनी पत्नी को क्या जवाब दे। इसलिए उसने बात को घुमा दिया, 'लेकिन हमारे पिताजी, उनका आकस्मिक निधन, और हमारे बेटे का वह इतना बड़ा एक्सीडेंट?'

पत्नी इसके लिये पहले से ही तैयार थी। वह धीरे से बोली, 'पिताजी के निधन का मुझे भी दुःख है। उनके जाने से अब हम लोग उनके आशीर्वाद से महरूम हो गये। लेकिन ये भी तो सोचो कि उन्होंने अपना पूरा जीवन शान से जिया। कभी किसी पर आश्रित नहीं हुए। ऐसे में अगर वे अपनी शरीर की अशक्तता के कारण दूसरों की दया पर जीने के लिए विवश हो जाते, तो उन्हें कितना बुरा लगता। वे जीवन में सक्रिय रहते हुए अपनी उम्र पूरी करके इस दुनिया से विदा हुए, क्या यह हमारे लिए संतोष का विषय नहीं।'

पति इस बार कुछ नहीं बोला, सिर्फ उसने अपनी पत्नी की ओर देखा। लेकिन अब तक उसकी नजर से दुःख की बदली पूरी तरह से छंट चुकी थी। यह देख कर पत्नी मन ही मन प्रसन्न हुयी। वह अपने पति के हाथों को अपने हाथों में लेती हुई बोली, 'हमारे बेटे के एक्सीडेंट ने तो सचमुच मुझे सदमे में ला दिया था। पर शायद हमने अपने जीवन में कुछ अच्छे काम किये थे, इसलिए इतने भयानक एक्सीडेंट के बाद भी सिर्फ बेटे के पैर की हड्डी टूटी। और उसका पूरा शरीर सही सलामत रहा। क्या यह ईश्वर की कृपा के बगैर सम्भव है?'

पत्नी की सकारात्मक बातें सुनकर पति की सोच एकदम से बदल गयी। उसके भीतर जमा हुआ निराशा का अंधकार एक पल में छंट गया और मन में उत्साह की लहरें ठाठें मारने लगीं। तभी समुद्र की एक बड़ी सी लहर आयी और उन दोनों को भिगो गयी। समुद्र की लहर ने पति पर जैसे जादू सा कर दिया। वह जैसे फिर से अपनी जवानी के दिनों में जा पहुंचा। उसने जोश में आकर अपनी पत्नी को बाहों में उठाया और तेजी से समुद्र की ओर दौड़ पड़ा।

तो मित्रो, यह है सकारात्मक सोच का जादू, जो जीवन को इस तरह से बदल कर रख देती है कि सहसा यकीन करना मुश्किल हो जाता है। आप भी सकारात्मक सोच अपनायें और अपने जीवन को खुशहाल बनायें।

साभार- हिन्दी वर्ल्ड

अपवाद भी नियन्ता की घोषणा कर रहे हैं

सृष्टि में कभी कभी नियमों के अपवाद भी पाये जाते हैं। ये अपवाद भी नियमों के अस्तित्व की घोषणा करते हैं क्योंकि नियम न होंगे तो अपवाद कहाँ से होंगे? नियम है तभी अपवाद है। विचार करें तो ये अपवाद भी न केवल ईश्वर नाम की सर्वोत्कृष्ट चेतन सत्ता का प्रमाण देते हैं वरन् उसे जीवों के लिए दयालु भी घोषित करते हैं।

आप सादा पानी का उदाहरण लें। क्या जल के बिना जीवन संभव है? कदापि नहीं। परन्तु जल, उसके आसपास के पदार्थ जिस नियम का पालन कर रहे हैं, उसे तोड़ता नजर आता है। पानी के लगभग बराबर भार वाली अमोनिया तथा पानी से घनिष्ठ संबंध रखने वाला हाइड्रोजन सल्फाइड, इस पृथ्वी पर उपस्थित सामान्य दाब व ताप पर गैस हैं। पानी को भी गैस ही होना चाहिये। अब जरा विचार करें कि पृथ्वी का दाब ताप तो परिवर्तित किया नहीं जा सकता क्योंकि ऐसा करने पर पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं रह पावेगा। और स्थापित नियमों के अनुसार पानी ऐसी अवस्था में गैस होगा तो किस प्रकार से जीवनदायी होगा इसकी कल्पना ही की जा सकती है। अतः अपवाद रूप में पानी को गैस रूप में न रख द्रव बनाना स्पष्ट कथन रहा है कि यह ईश्वर का करिश्मा है क्योंकि नियमों को तोड़, अपनी प्रजा के कल्याण की भावना से अपवाद स्थापित करने हेतु जो सामर्थ्य व करुणा जिस चैतन्य में हो सकती है वह ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता।

कड़ाके की सर्दी में जब पानी जम जाता है तब नदियों और झीलों के अन्दर के सभी प्राणी मृत्यु को अवश्यम्भावी प्राप्त हो जावें यदि प्रभु की असीम अनुकम्पा न हो। यहाँ भी जल में अद्भुत गुण पैदा किया गया है। जितने भी ज्ञात पदार्थ हैं उन

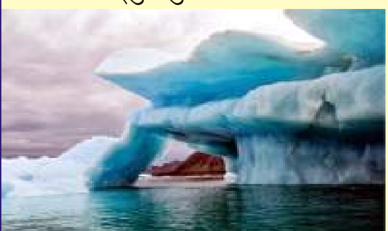

सभी में पानी एकमात्र ऐसा द्रव्य है जो जमने पर और हल्का हो जाता है। इसी अतीव महत्वपूर्ण गुण के कारण सर्दियों में तापमान कम होने पर पानी की ऊपरी सतह सर्वप्रथम बर्फ बन हल्की हो सतह पर तैरती है तथा धीरे-धीरे कठोर पिण्ड का रूप धारण कर पानी की सबसे ऊपरी सतह पर इंसुलेशन की ऐसी परत बना देती है जिसके कारण नीचे का पानी जमाव बिन्दु के ऊपर के तापमान पर बना रहता है। पानी बर्फ बनते समय तापमान भी छोड़ता है

ईश्वर सिद्धि-सृष्टिकर्ता होने से-

'जो कोई कहे कि परमेश्वर की सत्ता में क्या प्रमाण है? तो उसे यह उत्तर देना चाहिये, कि यह जो संसार है, वह सारा परमेश्वर को प्रमाणित करता है।(यजु. २३/२ के म. द. कृत भाष्य से)

इस कारण ग्रीष्म आने तथा पुनः सतही बर्फ पिघलने तक मछलियाँ तथा अन्य जल जन्तु और जलीय वनस्पति सुरक्षित बनी रहती हैं। क्या इस सब में हमें प्रभु की दया के दर्शन नहीं होते?

ईश्वर सिद्धि-सृष्टिकर्ता होने से-

दृशानो रुक्मऽउर्व्या व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः।
अग्निरमृतोऽअभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः॥ - यजु.१२/१

जैसे इस संसार में सूर्य आदि सारे पदार्थ अपने दृष्टान्तों से परमेश्वर का निश्चय कराते हैं, वैसे ही मनुष्यों को होना चाहिए।

तनिक इस पर भी विचार करें। स्तनपायी सभी प्राणी जो थलचर अर्थात् पृथ्वी पर रहते हैं पानी में नहीं रह सकते। पानी में अधिक देर रहने पर, डूबकर उनकी मृत्यु हो जावेगी। पर मानव भ्रूण जो माता के गर्भाशय में पल रहा है उस पर चिन्तन करें। आँख, नाक, कान सभी बन चुके हैं और चारों ओर द्रव मौजूद है पर गर्भस्थ शिशु जीवित रहता है। यह द्रव गर्भस्थ शिशु की अनपेक्षित दबावों से रक्षा करने हेतु आवश्यक है। अतः दयालु प्रभु ने ही इस 'अपवाद' का निर्माण किया है।

पृथ्वी के ऊपर रोज लाखों उल्काऐं गिरती रहती हैं। इनके द्रव्यमान व वेग को देखते हुए तथा एकाध उल्काऐं जो पृथ्वी तक पहुँच सकीं हैं उनके संघात से पृथ्वी पर पैदा हुए गड्ढे को देख कल्पना की जा सकती है कि ये सभी उल्काऐं पृथ्वी तक पहुँच जावें तो पृथ्वी के प्राणियों के समाप्त होने में समय न लगे। परन्तु यहाँ हमारे लिए लगभग ८०० मील ऊँचा वायुमण्डल बनाया गया है जो अन्य अनेक कार्यों के साथ उल्काओं के घातक प्रभाव से पृथ्वी को बचा लेता है। पदे पदे हमारे चारों ओर इस प्रकार के नियम व व्यवस्थाओं का पाया जाना कि जिनमें यदि मनुष्य हस्तक्षेप न करे तो पृथ्वी पर हमारा, जन्तुजगत् व वनस्पति जगत् के सदस्यों का अरबों वर्षों तक सुखी जीवन संभव है, अकस्मात् का परिणाम नहीं हो सकता। यह निश्चित सर्वनियन्ता वह भी दयालु और सर्वोच्च बौद्धिक सत्ता का ही कार्य है।

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

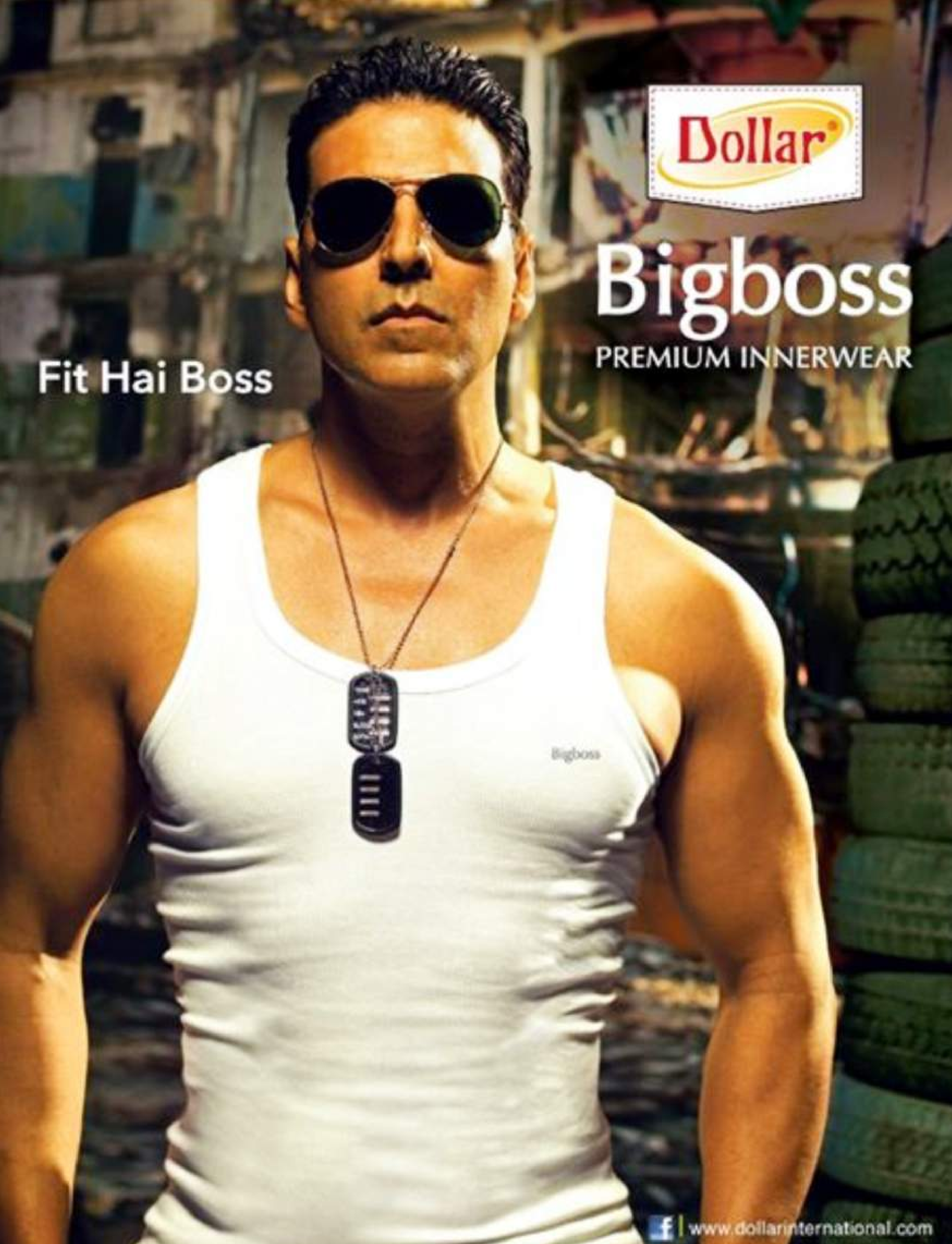

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 July-2018 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जब भोजन सिद्ध हो, तब जो कुछ भोजनार्थ बने ..... कुत्ते, पापी, चाण्डाल, पापरोगी, कौवे और कृमि अर्थात् चींटी आदि को अन्न देना, यह मनुस्मृति आदि की विधि है।

सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १०१-१०२

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर